"मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा"

तथा
अन्य प्रवचन

लेखक
सनी डेविड

सत्य सुसमाचार रेडियो संदेशमाला

प्रकाशक
मसीह की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स 3815
नई दिल्ली – 110049

"Whatever A Man Sows That He Will Also Reap"

AND

Other Sermons

By Sunny David

विषय सूची

पृष्ठ

1. "मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा" 1
2. "धोखा न खाओ।" 7
3. आवश्यक क्या है ? 13
4. यदि आज रात आप का प्राण आप से ले लिया जाए ? 18
5. क्या आप पाप के लिये मर चुके हैं ? 24
6. परमेश्वर ने मनुष्य को क्यों बनाया है ? 30
7. परमेश्वर ने हमे बाइबल क्यों दी है ? 36
8. क्या मैं परमेश्वर की इच्छा को जान सकता हूं ? 42
9. क्या आप परमेश्वर में विश्वास करते हैं ? 47
10. परमेश्वर कहां है ? 53
11. परमेश्वर आप से क्या चाहता है ? 59
12. आप के जीवन में परमेश्वर का स्थान कहां है ? 65
13. हम क्या कह रहे हैं ? 71

सत्य सुसमाचार

यीशु मसीह के सुसमाचार का रेडियो कार्यक्रम

19, 25 तथा 41 मीटर बैंड पर रेडियो श्रीलंका से सुनिये प्रत्येक मंगलवार और बृहस्पतिवार और शुक्रवार को रात में नौ बजे तथा प्रत्येक रविवार को दिन में 12:45 पर

प्रस्तुतकर्त्ता
मसीह की कलीसिया

वक्ता
सनी डेविड

"मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा"

आज मैं आप के सामने बाइबल के इस कथन को रखना चाहता हूं कि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा। एक जगह बाइबल में यूं लिखा है, कि "धोखा न खाओ, परमेश्वर ठठ्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा । क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा।" (गलतियों ६:७,८)। कितना सच्चा है यह कथन! और विशेषकर आज के इस वर्तमान युग मे जब कि हम सब बहुत सी ऐसी बातों के बारे मे सुन रहे हैं, और पढ़ रहे हैं, और देख रहे हैं, कि आज का मनुष्य अपने ही बोए हुए बीजों की फसल कैसे–कैसे दुखों और कष्टों के द्वारा काट रहा है। दुनिया भर में और विशेषकर हमारे देश में अब इस बात पर प्रकाश डाला जा रहा है कि पेड़ों को काट–काटकर हमने स्वयं अपने ही ऊपर खतरा मोल ले लिया है। क्योंकि वृक्ष हमारे स्वास्थ्य के लिये और हमें अच्छा वातावरण देने के लिये बडे ही आवश्यक है। चेरापुन्जी जैसी जगह में जहां हमारे देश में सबसे अधिक पानी होता था, आज वहां पानी नहीं है। क्योंकि लोगों ने वृक्षों को काट दिया है। अब वहां लोग एक–एक बाल्टी पानी के लिये तरसते हैं। और दूर–दूर तक पानी लेने के लिये जाते हैं। यह इसी बात का एक उदाहरण है, कि मनुष्य जो बोता है वही काटता है।

इसी तरह से आज अनेकों लोग कुछ सामाजिक कुरीतियों के शिकार हैं, जिनके कारण उन्हें अपने बोए हुए फल काटने

पड़ते हैं। और ऐसे ही बहुतेरे लोग पाप के बीज बो रहे हैं, जिनके कारण उन्हें अकारण कष्ट और मौत का सामना करना पड़ रहा है। आज हमारे सामने "एड्स" जैसी भयानक बीमारियां आ रही हैं, और कहा जा रहा है, कि यह खतरनाक बीमारी सन् दो हजार तक एक ऐसा बड़ा भयानक सर्वव्यापी रूप धारण कर सकती है कि इस से करोडो लोगों की जाने जा सकती हैं। "एड्स" मनुष्य के पाप का परिणाम है। यह वह फसल है जिसे उसने स्वयं बोया है, और अब वह उसकी कटनी काट रहा है। नए–नए रोग आज लोगों की जाने ले रहे हैं–क्योंकि जो उन्होंने बोया है, उसे उन्हें काटना भी अवश्य है। और जो शरीर के लिये बोते हैं वे शरीर के द्वारा विनाश की ही कटनी काटेंगे। प्रत्येक सिगरेट के पैकेट पर जो बाजार में बिकता है, और शराब की हर एक बोतल पर जो दुकानों से खरीदी जाती है, लोगो का ध्यान इस बात पर दिलाया जाता है कि सिगरेट पीना और नशा करना शरीर के लिये हानिकारक है। क्योंकि आज इन्सान ऐसी–ऐसी चीजों के बुरे और जान लेवा सबूत हस्पतालों में, और घरों में और अपनी सड़कों पर देख रहा है। यह एक ऐसी सच्चाई हैं जिससे हम बच नहीं सकते। चाहे हम जानबूझकर बोएं या अज्ञानता में बोए, पर मनुष्य जो कुछ बोता है उसे वह अवश्य ही काटेगा।

और यह बात न सिर्फ सामाजिक और शारीरिक रूप से ही सच है, पर आत्मिक दृष्टिकोण से भी यह बात उतनी ही सच्ची है। हजारों साल पहले एक समय था, जबकि नूह नाम के परमेश्वर के एक प्रचारक ने सौ वर्ष से भी अधिक समय तक लोगों के बीच में इस बात का प्रचार किया था कि वे पाप से अपना मन फिरा लें और अपने बुरे कामों को छोड़कर परमेश्वर की ओर फिरें। उसने लोगों से कहा था, कि यदि वे अपना मन नहीं फिराएंगे तो परमेश्वर एक बहुत

बड़ा जल–प्रलय भेजकर उन सब को नाश कर देगा। परन्तु बाइबल हमें बताती है, कि उन में से एक ने भी अपना मन नहीं फिराया था। उन्होंने नूह की बातों पर कोई ध्यान ही नही दिया था। इसके विपरीत्त वे नूह का हंसी और ठट्ठा उड़ाते थे। वे अपने बुरे और अधर्म के कामों में यों ही लगे रहे और अपनी बुराईयों के बीज बोते रहे। क्योंकि वे ऐसा सोंच भी नहीं सकते थे कि उन पर ऐसी भारी विपत्ति वास्तव में आ सकती है। लेकिन परमेश्वर कभी झूठ नहीं बोलता। वह धीरज तो अवश्य ही धरता है, क्योंकि वह नहीं चाहता कि कोई भी मनुष्य अपने पाप के कारण नाश हो। पर वह जो कहता है उसे वह अवश्य ही पूरा करता है। और ऐसा ही उस समय भी हुआ था । जल–प्रलय आया था और जिन्होंने उस समय परमेश्वर की बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया था वह उन सब को बहा ले गया था। इस घटना के हज़ारों वर्ष बाद, प्रभु यीशु मसीह ने लोगों से इस प्रकार कहा था, कि जैसे नूह के दिनों में एकाएक जल–प्रलय आया था वैसे ही एक दिन वह जगत का न्याय करने के लिये वापस आएगा। यीशु ने कहा था, कि जैसे नूह के दिन थे वैसे ही एक दिन उसका आना भी होगा। "क्योंकि जैसे जल–प्रलय से पहले के दिनों में, जिस दिन तक कि नूह जहाज़ पर न चढ़ा था, उस दिन तक लोग खाते–पीते थे, और उन में ब्याह–शादियों होती थी। और जब तक जल–प्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया, तब तक उन को कुछ भी मालूम न पड़ा" वैसे ही उसका आना भी होगा। (मत्ती २४:३७–३९)।

परमेश्वर, जिसने इस संसार को और इन्सान को बनाया है, उसी ने हमे यह भी बताया है कि एक दिन वह हम सब का न्याय भी करेगा। एक दिन हम सब उसे अपने–अपने जीवनों का लेखा देंगे। बाइबल में लिखा है, कि उस दिन

सारे मरे हुए लोग परमेश्वर की शक्ति से उसी तरह से जी उठेगें,जैसे कि परमेश्वर ने यीशु को मृत्यु के बाद फिर से जिलाया था, और परमेश्वर हम सब का न्याय करेगा। प्रभु यीशु ने कहा था कि इस बात से अचम्भा मत करो कि जितने लोग मर चुके हैं एक दिन वे सब–के–सब जी उठेंगे, और,"जिन्होंने भलाई की हैं वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेगें और जिन्होने बुराई की हैं वे दण्ड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेगें।" (यूहन्ना ५:२८–२६)। पौलुस प्रेरित ने बाइबल में लिखकर कहा था, "क्योकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने– अपने भले बुरे कामों का बदला जो उस ने देह के द्वारा किए हों पाए।" (२, कुरिन्थियों ५:१०)। और उसने कहा था कि "इसलिये परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है क्योंकि उसने एक दिन ठहराया हैं जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।" (प्रेरितों १७:३०,३१)।

बाइबल में लिखा है, कि आज से लगभग दो हज़ार साल पहले जब पौलुस ने लोगों के बीच में इन बातों का प्रचार किया था तो लोग ये बातें सुनकर उसकी हंसी उड़ाने लगे थे। क्योंकि उन को ये बाते बड़ी ही विचित्र और अजीब सी लगी थी, कि सारे मरे हुए लोग जी उठेंगें, और सब का न्याय किया जाएगा। और आज भी अनेकों लोगों का व्यवहार ऐसा ही है। वे ये बातें सुनकर हंसते हैं, और मजाक उड़ाते हैं, और कहते हैं, कि ऐसा कैसे हो सकता है? पर क्या जिस परमेश्वर ने आरम्भ में इन्सान को मिटटी से पैदा किया था, क्या वही परमेश्वर इन्सान को मिटटी मे

से जिला नही सकता ? और वह परमेश्वर, जो आज भी एक मरे हुए बीज को मिटटी में एक नया जीवन देकर उसे एक पेड़ बनाकर खड़ा कर देता है, क्या वही परमेश्वर न्याय के दिन सब इन्सानों को जिन्दा करके खड़ा नहीं कर सकता ? क्या परमेश्वर से कोई भी काम असम्भव है ? या क्या वह झूठ बोलता है? या क्या उसे यह अधिकार नही कि वह हम सबका न्याय करे ?

जिन बहुत सी बातों को परमेश्वर ने अपने वचन की पुस्तक में हमारे लिये प्रकट किया है, उन में से एक बड़ी ही खास और महत्वपूर्ण बात यह है कि परमेश्वर ने प्रत्येक मनुष्य के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त किया है। (इब्रानियों ९:२७)। परमेश्वर ने हमें यह जीवन दिया है, और जिन्दा रहने के लिये उसने हमे तरह–तरह की वस्तुएं दी हैं। वह चाहता है कि हम अच्छे काम करें और उसकी प्रशंसा के योग्य जीवन व्यतीत करें। प्रभु यीशु ने सिखाया था, कि हमारा उजियाला प्रकाश की तरह सब लोगो के सामने ऐसे चमकना चाहिए कि लोग हमारे भले कामों को देखकर हमारे उस पिता की जो स्वर्ग मे है बड़ाई करे। (मत्ती ५:१६)। परमेश्वर ने हमें पाप करने के लिये नहीं बनाया है पर पवित्र बनकर रहने के लिये बनाया है। और इसी कारण, बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र प्रभु यीशु मसीह को हम सब के लिये दे दिया। और उसे हमारे पापों का प्रायश्चित बनाकर क्रूस के ऊपर मृत्यु का दन्ड दिलवाया, ताकि उसके द्वारा हम अपने पापों से और बुरे और अधर्म के कामों से छुटकारा पाकर फिर से पवित्र बन जाएं। ताकि हम अपने पापों के कारण नरक में हमेशा का दन्ड न पाएं, परन्तु यीशु के बलिदान के फलस्वरूप स्वर्ग मे हमेशा का जीवन पाएं। परमेश्वर नहीं चाहता, कि हम अपने शरीर की अभिलाषाओं

के अनुसार चलकर शरीर के लिये बोएं। पर वह यह चाहता है, कि हम उसके पवित्रात्मा के अनुसार चलकर आत्मा के लियें बोएं और न्याय के दिन अनन्त जीवन की कटनी काटे। क्या आज आप अपने जीवन में इस महान निश्चय को करने को तैयार हैं ? क्या आप आज अपना जीवन परमेश्वर को देने को तैयार हैं? क्या आज आप अपने सब बुरे कामों को छोड़कर उसके पास आने को तैयार हैं ? क्या आज आप इस बात को मानने को तैयार हैं कि यीशु, परमेश्वर का पुत्र आप के पापों का प्रायश्चित है ? याद रखिए, जो भी आज आप बोंएंगें वही आप भविष्य में काटेंगें। आज आप जो निश्चय करेंगे उसी के अनुसार न्याय के दिन आपको प्रतिफल भी मिलेगा। और मेरी आशा है, कि जो भी निश्चय आज आप करेंगे वह सही निश्चय करेंगें। परमेश्वर आप से प्रेम करता है। वह आप के सारे पापो को क्षमा करने को तैयार है। उसका प्रेम अपार है, और उसकी दया विशाल है, और उसका अनुग्रह महान् है। क्या आप आज अपना जीवन उसे देगें ? परमेंश्वर की इच्छा है कि आप उसके पुत्र यीशु मसीह में विश्वास लाएं जिसे उसने आप के पापों का प्रायश्चित करने को जगत में भेजा था। औ्र वह चाहता है कि आप अपने प्रत्येक उस कार्य से अपना मन फिराएं जो उसकी इच्छा के विरूद्ध है, और अपने प्रत्येक पाप की क्षमा के लिये उसकी आज्ञा मानकर बपतिस्मा लें। क्या आप आज अपना जीवन परमेश्वर को देने को तैयार हैं ?

" धोखा न खाओ । "

आज मैं आप के साथ इस विषय पर बात करना चाहता हुं, कि कोई भी व्यक्ति कभी भी बड़ी ही आसानी के साथ धाखे मे आ सकता है । और इसलिये हमें चाहिए कि हम बड़े ही खबरदार रहें, चौकस रहें, कि हम धोखें में न आ जाएं । यह बात न केवल शारीरिक रूप से ही आवश्यक है, पर आत्मिक रुप से भी आवश्यक है । क्योंकि यदि हम शारीरिक रूप से धोखें में आएंगें तो हम शारीरिक हानि उठायेंगें । पर यदि हम आत्मिक रूप से धोखे में आते हैं तो हम अपनी आत्मा की हानि उठाएंगे ।

बाइबल की सबसे पहली पुस्तक का नाम है उत्पत्ति की पुस्तक । इस पुस्तक के सैंतीसवें अध्याय में हम याकूब नाम के एक व्यक्ति के बारे में पढ़ते हैं । याकूब के बारह पुत्र थे । और उन में से एक का नाम था यूसुफ़ । यूसुफ परमेश्वर से डरता था और अपने पिता के बडा ही करीब रहता था । इसलिये याकूब अपने पुत्रों में से सबसे अधिक प्रेम यूसुफ़ से ही करता था । पर यह बात याकूब के अन्य पुत्रों को अच्छी नहीं लगती थी, सो उन्होंने उसे खत्म करने की योजना बनाई । एक दिन जब वें अपने घर से दूर भेड़–बकरियां चराने जंगल मे गए हुए थे । तो उन्होंने यूसुफ़ को पकड़कर उसे मारना चाहा । लेकिन फिर उन्होंने अपना विचार बदल दिया और उसके कपड़े उतारकर उसे एक गहरें गड्ढें में डाल दिया । कुछ देर बाद उन्होंने एक काफ़िला आते देखा जो मिस्र की ओर जा रहा था । सो उन्होंने यूसुफ़ को उन लोगों के हाथ बेच दिया । और एक बकरे को मारकर उसके खून में यूसुफ के कपड़ों को रंग लिया । जब वे अपने घर

गए तो उन्होंने अपने पिता के सामने खूब रोना–धोना शुरू कर दिया और यूसुफ़ के कपड़े अपने पिता को दिखाकर उन्होंने उस से कहा, कि यूसुफ़ को किसी जंगली जानवर ने खा लिया है, और हमें उस के यह कपड़े मिले हैं। और याकूब ने मान लिया, कि उसका पुत्र वास्तव में मर चुका है और वह भी उनके साथ शोक मनाने लगा। यानि वह धोखे में आ गया।

किसी भी व्यक्ति के लिये धोखे मे आ जाना बड़ा ही आसान है। मनुष्य अकसर धोखें में आ जाता है। अभी कुछ ही समय की बात है, जबकि एक महिला ने एक शहर में हज़ारों लोगों को धोखा देकर उनसे करोड़ों रूपये लूट लिये थे। उसका कहना यह था, कि अगर कोई उसके पास दस हजार रूपये जमा करवाएगा तो वह उसे हर महीने हमेशा एक हज़ार रूपये देती रहेगी। और यदि कोई एक लाख रूपया उसके पास रखवाएगा, तो उसे वह हमेशा हर महीने दस हजार रूपये देती रहेगी। और यह काम उस महिला ने धर्म की आड़ मे आरम्भ किया। और बहुतेरे लोग उसके पास आ–आकर रूपया जमा करवाने लगे, और ऐसे ही लोगों को वापस भी मिलने लगा। धीरे–धीरे जब लोगों को लाभ भी होने लगा, तो उस महिला की प्रसिद्धी बढ़ने लगी। तब क्या था, लोग पैसा जमा करवाने के लिये बड़ी–बड़ी दूर से आने लगे– लम्बी लाईनें लग गई, और उस महिला को लोग "माता जी" कहने लगे। हज़ारो और लाखों रूपया उसके पास रोज़ आने लगा। और जो लोग रूपया जमा करवाने आते थे उन मे सब तरह के लोग थे– दफ़्तरों मे काम करनेवाले, व्योपारी, बड़े–बड़ें अफ़सर,जमीदार, और पढ़ें लिखें लोग। क्योंकि रूपये का लोभ किसे नहीं होता ? पर जब बहुत समय बीत गया तो एक दिन वह महिला लोगों का करोड़ो रूपया लेकर वहां से ग़ायब हो गई। और जब लोगों को इस बात का पता

चला तो वे रोने–पीटने लगे, कुछ को दिल के दौरे पड़ गए। क्योंकि उनमे से कई थे जिन्होंने अपने घर, ज़मीनें और गहने बेच–बेचकर "माता जी" के पास रूपया जमा करवाया था। पर, अब बहुत देर हो चुकी थी। वे लुट चुके थे। उन्हें होश तो आया पर बहुत देर से आया। वे सब धोखे मे आ गए थे।

बाइबल में एक जगह लिखा है कि "धोखा न खाओ, परमेश्वर ठटठों नही उड़ाया जाता, क्योंकि जो अपने शरीर के लिये बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा, और अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।" (गलतियों ६:७,८)।

यह बात बाइबल में इसलिये लिखी गई है, क्योंकि परमेश्वर जानता है, कि मनुष्य कितनी आसानी से धोखें मे आ जाता है। आज लाखों बल्कि करोड़ो लोग अपना जीवन आत्मिक धोखें मे रहकर व्यतीत कर रहे हैं। बहुतेरे आज धन और सांसारिक सुखों को प्राप्त करने के धोखें मे लीन हैं। उनका ध्यान इस बात पर जाता ही नही है कि कल जब वे अपना धन और अपनी सब वस्तुओं को इस पृथ्वी पर छोडकर चले जाएंगे तो उनकी आत्मा का क्या होगा ? ऐसे लोग उस व्यक्ति की तरह हैं जिसकी कहानी सुनाकर प्रभु यीशु ने कहा था,कि वह यह कहता था, कि अब मेरे पास बहुत धन–सम्पति है, सो अब मैं खूब खाऊंगा, पीयूंगा, और मौज ऊड़ागां। पर वह यह नहीं जानता था, कि वही दिन उसके जीवन का आखरी दिन था, उसी रात को वह मरनेवाला था। उसने अपने शारीरिक और मरनहार जीवन के लिये तो सारी तैयारी कर ली थी। पर अपने आत्मिक और अमर जीवन के लिये उसने कोई तैयारी नहीं की थी। उसका दृष्टिकोण ऐसा ही था जैसा कि आज अधिकांश लोगों का है। वे कहते हैं, खाओं पीओ, क्योंकि इसके अतिरिक्त

जीवन में ओर कुछ नही है। आत्मिक जीवन उनके लिये एक झूठी बात है। परमेश्वर उनके लिये एक बहुत बड़ा धोखा है। वे कहते हैं कि परमेश्वर नाम की कोई चीज़ ही नही है। वे मानते ही नहीं, कि एक दिन उन्हें परमेश्वर के न्याय का सामना करना होगा। उनके लिये जीवन सिर्फ़ यही है। ऐसे लोग, वास्तव में, एक बहुत बडे धोखें मे हैं। और एक दिन जब उन्हें अपने धोखें का एहसास होगा तो वे बड़े ही पछताएंगे। और तब, यह पुरानी कहावत उनके ऊपर ठीक बैठेगी, कि "अब पछताए क्या होए, जब चिड़ियें चुग गई खेत।"

पर यदि कोई सांसारिक धोखे मे रहकर अपनी आत्मा की हानि उठाएगा, तो इसके लिये वह परमेश्वर को दोषी नहीं ठहरा सकता। परमेश्वर किसी को भी नरक मे नहीं भेजता। यदि कोई अपने जीवन के अन्त मे नरक मे जाएगा तो वह स्वंय अपनी ही गलती और अपनी ही इच्छा से जाएगा। क्योंकि परमेश्वर ने हमें नरक में जाने से बचाने के लिये वह सब कुछ कर दिया है जो हमारे लिये आवश्यक है। उसने अपने एकलौते पुत्र का हमारे लिये बलिदान कर दिया है। और हमें अपनी बाइबल के द्वारा बता दिया है, कि उस ने अपने एकलौते पुत्र यीशु मसीह की क्रूस के ऊपर मृत्यु के द्वारा सारे जगत के पापों का प्रायश्चित कर दिया है। बाइबल में परमेश्वर ने हमे बता दिया है, कि अपने पापों से मुक्ति पाने के लिये हमें, कैसा जीवन व्यतीत करना चाहिए। परमेश्वर ने हमे बता दिया है, कि हमें उसकी आराधना किस तरह से करनी चाहिए। और उसने हमें यह भी बताया है कि एक दिन वह सब बातों के बारे में हम सब का न्याय करेगा। सो परमेश्वर ने अपनी इच्छा को सारे जगत पर हमेशा के लिये प्रकट कर दिया है, ताकि हम में से कोई भी धोखे मे न रहे।

किन्तु, फिर भी आज पृथ्वी पर अनेकों लोग धोखें में हैं। क्योंकि लोग परमेश्वर की बातों को न मानकर मनुष्यों की बातों को मानते हैं। वे मनुष्यों के बनाएं नियमों और शिक्षाओं को मानकर परमेश्वर के पास पहुंचना चाहते हैं। लोग चमत्कारों के धोखें में रहते है। कोई किसी "बाबाजी" के पास जाता है, तो किसी "माता जी" के पास जाता है। मनुष्य–मनुष्य को धोखा दे रहा है, और स्वंय अपने आप को धोखा दे रहा है। जबकि परमेश्वर केवल एक ही है। और उसने मनुष्यों के लिये अपनी सम्पूर्ण इच्छा को सारे जगत पर सदा के लिये प्रकट कर दिया है। लेकिन, फिर भी न जाने कितने लोग अपने जीवनों को आत्मिक धोखें में रहकर व्यतीत कर रहे हैं। लोग झूठ को सच समझ कर मान रहे हैं––बहुतेरे अज्ञानता से ऐसा कर रहे हैं, और बहुत से ऐसे भी हैं जो सच को सुनना ही नहीं चाहते । क्योंकि वे उस मार्ग पर चलना छोड़ना नहीं चाहते जिस पर वे चल रहे हैं। पवित्र बाइबल में एक जगह लिखा है, कि, "ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक दिखाई देता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।" (नीतिवचन १४:१२)।

सो, हमें क्या करना चाहिए ? हमे अपने विश्वासों को जांचकर देखना चाहिए, कि क्या हमारा विश्वास सच्चे और जिंदा परमेश्वर पर है, या जगत की झूठी ओर बनावटी बातों पर है ? हमें उन बातों को परखकर देखना चाहिए जिन्हें हम धार्मिक रूप से मानते हैं, कि क्या उनके बारे में परमेश्वर ने हमें अपनी पुस्तक बाइबल में बताया है या नहीं ? हमे इस बात पर विचार करके देखना चाहिए, कि क्या हमने परमेश्वर की इच्छा को मानकर अपने सब पापों से मुक्ति पाली है या नहीं ? और क्या हम अपना जीवन परमेश्वर की मर्जी से व्यतीत कर रहे हैं या नहीं। हमें इस बात को निश्चित कर लेना चाहिए, कि क्या हम इस संसार से जाने

को तैयार हैं या नहीं। इन बातों के सम्बन्ध में हमे धोखें मे रहने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि हमारे परमेश्वर ने हमें बड़ी ही स्पष्टता से इन बातों के बारे में बता दिया है। पर आवश्यकता इस बात की है, कि आज हम में से हर एक अपने विश्वास को परखे, उन सब बातों को परखे जिन्हें हम धार्मिक रूप से मानते हैं, और इस बात को निश्चित कर लें कि हमारा विश्वास सच्चे और जिन्दा परमेश्वर पर है, और हम उसकी इच्छा अनुसार चल रहे हैं। क्योंकि परमेश्वर ने हमे बनाया है, और हमें यह जीवन दिया है, उसी ने यह भी प्रकट किया है कि वह एक दिन हम सब का न्याय करेगा। क्या आप उस परमेश्वर से मिलने के लिये तैयार हैं ? क्या आप उसकी इच्छा को मानकर उस पर चल रहे हैं ?

आवश्यक क्या है ?

इस समय मैं आपके साथ इस प्रश्न पर विचार करना चाहता हूं , कि हमारे जीवनों में सबसे अधिक आवश्यक क्या है ? अब जहां तक आवश्यकता की बात है, बहुत सी वस्तुएं हमारे जीवनों में आवश्यक हो सकती हैं। जैसे कि पैसा हमारे लिये जरूरी है। हमें घर की आवश्यकता है। कपड़े और भोजन हमारे लिये जरूरी है। और ऐसे ही बहुत सी और भी वस्तुएं ऐसी हैं, जो हम सब के लिये आवश्यक हैं। और उन आवश्यक वस्तुओं को प्राप्त करने के लिये लोग मेहनत करते हैं। और बहुतेरे लोग ऐसे भी हैं, जो ऐसी–ऐसी चीजों को हासिल करने के लिये झूठ बोलते हैं और बहुतेरे गलत काम करते हैं। पर मान लीजिये, मेरे पास बहुत सारा रूपया पैसा हो जाए, जिस मैं जो चाहूं खरीद लूं। और में अपने रहने के लिये एक बहुत बढ़िया घर भी बनवा लूं। फिर मान लीजिये, कि मैं एक बहुत बढ़िया गाड़ी खरीद लूं, और अपने घर मे नौकर– चाकर भी रख लूं। मैं एक अच्छा व्यापारी बन जाऊं, अच्छी से अच्छी शिक्षा प्राप्त कर लूं , नाम और शोहरत प्राप्त कर लूं यानि दुनिया की हर एक वस्तु जिसे लोग आवश्यक समझ कर प्राप्त करना चाहते हैं, मैं हासिल कर लूं। और फिर एक दिन अचानक मैं बहुत सख्त बीमार पड़ जाऊं या किसी दुर्घटना का शिकार बन जाऊं, या मुझे दिल का दौरा पड़ जाए, और मैं इस जगत को छोडकर चला जाऊं। तो मैं उन सब वस्तुओं में से कौन सी चीज अपने साथ ले जा सकूगां जिन्हें मैं नें जीवन भर इकटठा किया था ? या उन में से कौन सी वस्तु मेरे काम आएगी ? सो मैं क्या देखता हूं ? मैं देखता हूं कि मैं

अपना भरोसा जगत की किसी भी वस्तु पर नहीं रख सकता। क्योंकि उन से मेरा सम्पर्क किसी भी समय टूट सकता है।

प्रभु यीशु ने एक बार शिक्षा देकर इस प्रकार कहा था, कि "चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाए रखोः क्योंकि किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नही होता।" और फिर, प्रभु ने एक दृष्टान्त देकर इस प्रकार कहा था, एक बार "किसी धनवान की भूमि में बड़ी उपज हुई। तब वह अपने मन में विचार करने लगा कि मैं क्या करूं, क्योंकि मेरे यहां जगह नहीं, जहां अपनी उपज इत्यादि रखूं। और उस ने कहा, मैं ऐसा करूंगा : कि मैं अपनी बखारियां तोड़कर उन से बड़ी बनाऊंगा, और वहां अपना सब अन्न और सम्पत्ति रखूंगाः और अपने प्राण से कहूंगा, कि प्राण तेरे पास बहुत वर्षों के लिये बहुत सम्पत्ति रखी है, चैन कर, खा, पी,और सुख से रह। परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा, कि हे मूर्ख ,इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगाः तब जो कुछ तूने इकट्ठा किया है वह सब किसका होगा ?" और यीशु ने कहा कि "ऐसा ही वह मनुष्य भी है, जो अपने लिये धन बटोरता है परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं है।" (लूका १२:१५--२१)।

एक बहुत बड़ी गलती जो लगभग हर एक इन्सान करता है, वह यह है,कि वह यह भूल जाता है कि वह एक आत्मिक प्राणी है, और परमेश्वर ने उसे हमेशा वर्तमान होने लिये बनाया है, और यह संसार उसका सदा का घर नहीं है, इस पृथ्वी पर वह कुछ ही समय के लिये रहता है, पर मृत्यु के द्वारा वह इस जगत से अलग होकर उस जगह पर जाकर रहेगा जहां वह हमेशा वर्तमान रहेगा। और क्योंकि इन्सान इस महत्वपूर्ण बात को भुला देता है और इस बात पर कोई ध्यान नहीं देता, जो उसके लिये वास्तव में आवश्यक हैं। पर वह उन वस्तुओं की चिन्ता करता है जिन्हें वह

अपने लिये आवश्यक समझता है। जैसेकि अभी हमने उस व्यक्ति के बारे में देखा था, जिसकी कहानी सुनाकर यीशु ने कहा था, कि जब उसने अपने लिये पृथ्वी पर सारी आवश्यक वस्तुओं को इकट्ठा कर लिया था, तो उसने कहा था, कि आप मुझे कोई घटी नही है, अब मेरे पास सब कुछ प्रर्याप्त है। वह अपनी दृष्टि में एक धनवान बन गया था। उसे अपने विचार में अब कोई घटी नही थी। किन्तु परमेश्वर की दृष्टि मे वह एक कगांल था। क्योंकि परमेश्वर जानता था, कि उसी रात को वह व्यक्ति पृथ्वी पर उन सब वस्तुओं को, जिन्हे उसने अपने लिये एकत्रित किया था, सदा लिये छोडकर जाने वाला था। और वह परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं था। क्योंकि जहां वह जा रहा था वहा के जीवन के लिये उसके पास कुछ भी नहीं था।

सो वास्तव में मनुष्य के लिये क्या आवश्यक है ? हमारे जीवनों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण क्या होना चाहिए ? प्रभु यीशु ने एक बार लोगों की एक बहुत बड़ी भीड को आश्चर्यकम करके भोजन खिलाया था। वे सब लोग यीशु के आश्चर्यकम को देखकर बड़े ही प्रभावित हुए थे, और उन्होंने सोचा था कि प्रतिदिन यीशु के पास आने से उन्हें खानें के लिये भोजन मिला करेगा। सो जब वे यीशु को ढूंढते हुए उसके पास आए थे,तो यीशु ने उन्हें देखकर उनसे कहा था, कि "नाशमान भोजन के लिये परश्रिम करो जो अनन्त जीवन तक ठहरता है।" (यूहन्ना ६:२७)। सो जिन वस्तुओं का महत्व हमारे जीवनों में वास्तव में होना चाहिए, और जो चीजें हमारे जीवनों के लिये सचमुच मे आवश्यक हैं, वे वस्तुएं आत्मिक हैं। हमारा ध्यान आत्मिक भोजन की तरफ़ जाना चाहिए, हमारा ध्यान आत्मिक घर की तरफ़ जाना चाहिए, हमारा ध्यान आत्मिक घर की तरफ़ जाना चाहिए, और हमारा ध्यान आत्मिक कपड़ों की तरफ़ जाना चाहिए।

हमें पृथ्वी पर के अपने इस जीवन के रहते इस बात को पूरी तरह से निश्चित कर लेना चाहिए कि हमारी आत्माएं आत्मिक भोजन और आत्मिक जल से तृप्त हैं। प्रभु यीशु ने कहा था, कि मनुष्य केवल रोटी से ही नही परन्तु हर एक उस वचन से जीवित रहेगा जो परमेश्वर के मुख से निकलता है। (मत्ती ४:४)। हमें इस वास्तविकता को अनुभव करना चाहिए कि हम सब आत्मिक प्राणी हैं, हम में से हर एक के पास आत्मा हैं, हमारा एक आत्मिक व्यक्तित्व है। और उसके लिये हमे आत्मिक भोजन की आवश्यकता है। और वह आत्मिक भोजन परमेश्वर का वचन है, उसकी वे बाते हैं जिन्हें उसने हमारे लिये प्रकट किया है, और जिन पर चलकर हम उसके पास पहुंच सकते हैं। हमें अपने जीवनों मे इस बात को महसूस करना चाहिए, कि जब हम इस जगत को छोड़कर जाएंगें तो हमें एक आत्मिक घर की आवश्यकता पडेगी। स्वर्ग और नरक दो आत्मिक स्थान हैं। और हम में से प्रत्येक अपने लिये यह निश्चित कर सकता है कि मुझे पृथ्वी के जीवन के बाद कहां जाना है। वह व्यक्ति जिसने पृथ्वी पर तो अपने लिये सब कुछ इकट्ठा किया था और अपने लिये एक घर भी बनवाया था, इसलिये परमेश्वर की नज़र में एक मूर्ख था क्योंकि उस ने अपनी आत्मा के रहने के लिये सही चुनाव नहीं किया था। पृथ्वी पर तो उसके पास पहनने के लिये एक से एक बढ़िया कपड़े थे, पर उसकी आत्मा परमेश्वर के उद्धार के कपड़ों के बिना नंगी थी। वह धनवान था, और वह इस जगत से जा रहा था। पर वह भूखा, पियासा, नंगा, और बेघर था। और इसलिये परमेश्वर की दृष्टि में वह एक मूर्ख था।

पर आज आप परमेश्वर की दृष्टि में क्या है ? क्या आज आप परमेश्वर की दृष्टि में बुद्धिमान हैं ? क्या आज आप परमेश्वर की नज़र में धनवान हैं ?

आप अपनी और लोगों की दृष्टि में बुद्धिमान और धनवान हो सकते हैं, पर उसी समय आप परमेश्वर की नजर में मूर्ख और निर्धन हो सकते हैं। किन्तु, दूसरी ओर आप संसार की दृष्टि में मूर्ख और निर्धन हो सकते हैं, पर ईश्वर की नजर में आप बुद्धिमान और धनवान हो सकते हैं। क्या चुनेंगें आज आप ? क्या आप संसार की दृष्टि में बुद्धिमान और धनवान बनकर परमेश्वर की नजर में मूर्ख और कंगाल बनना पसन्द करेंगें ?

पवित्र बाइबल में लिखा है, कि "क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट तो मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है।" (१ कुरिन्थियों १:१८)।

परमेश्वर हम सबसे प्रेम करता है। और वह चाहता है, कि हम सब अपने पापों से उद्धार पाएं और जगत के इस जीवन के बाद उसके स्वर्ग में प्रवेश करें। सो उसने हम से प्रेम रखकर अपने एकलौते पुत्र यीशु मसीह को हमारे पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस पर बलिदान कर दिया था। क्या आप परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह में विश्वास करते हैं कि वह आपके पापों का प्रायश्चित है ? यीशु आप को पाप से मुक्ति दे सकता है। वह आप की आत्मा को नरक में जाने से बचा सकता है। क्योंकि वह आप के और सारे जगत के पापों का प्रायश्चित है। क्या आप उसमे विश्वास लाकर और अपने प्रत्येक पाप से मन फिराकर आज उसके पास आएंगें ? यीशु आप के जीवन की सबसे बड़ी आवश्यकता है। और मेरी आशा है कि आप उसे अपने जीवन में स्वीकार करेंगें।

यदि आज आपका प्राण आपसे ले लिया जाए ?

मित्रों, हमें अपने जीवनों के लिये वास्तव में परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए। क्योंकि उसने हमें यह जीवन, समय और अनेक अन्य आशीषें दी हैं। परन्तु हम अपने जीवनों को पृथ्वी पर किस प्रकार व्यतीत कर रहे हैं ? हम अपने समय को कैसे महसूस करते हैं, कि कोई भी दिन हमारे जीवन का अंतिम दिन हो सकता है ? क्या हम इस बात को अनुभव करते हैं, कि यह जीवन बड़ा ही अनमोल है, और यही एक जीवन है जिसे आपको इस ज़मीन पर व्यतीत करना है। क्योंकि परमेश्वर की पुस्तक, पवित्र बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने प्रत्येक मनुष्य के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त किया है। जिस प्रकार आप और मैं आज ज़िन्दा हैं, उसी प्रकार एक–न–एक दिन आप और मैं अवश्य ही मरेगें, और फिर एक दिन हम सब परमेश्वर को अपने–अपने जीवनों का लेखा देंगें। क्या अपने इस विषय पर गम्भीरता से कभी विचार किया है ?

वास्तव में देखा जाए, तो पृथ्वी पर अधिकांश लोग अपना जीवन बड़ी ही मूर्खता पूर्ण व्यतीत कर रहे हैं। क्योंकि वे इस संसार से जाने को तैयार नहीं हैं। उन्होंने कोई तैयारी नहीं की है। प्रभु यीशु ने एक बार कहा था, कि अधिकांश लोग पृथ्वी पर एक ऐसे चौड़े मार्ग पर चल रहे हैं, जो अन्त में उन्हें हमेशा के विनाश में पहुंचाएगा। (मत्ती ७:१३)। प्रभु ने कहा था, कि बहुतेरे लोग अपने लिये एक

ऐसा घर बना रहे हैं, जिसकी नेव वे बालू रेत पर डाल रहे हैं, और जब आंधी–तूफ़ान आएगा तो उनका वह घर गिरकर नाश हो जाएगा। यीशु ने कहा था, कि जो कोई मेरी बातें सुनकर उन्हें मानता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य की नाई ठहरेगा जिस ने अपना घर चट्टान पर बनाया था। और जब बारिश आई और आंधिया चली और उस घर पर टक्करें लगीं, तो वह नहीं गिरा,क्योकि उसकी नेव चट्टान पर डाली गई थी। परन्तु जो मेरी बातें सुनता है, पर उन पर नहीं चलता, प्रभु ने कहा था, वह उस निर्बुदि मनुष्य की नाई ठहरेगा, जिस ने अपना घर बालू–रेत पर बनाया था। और जब बारिश आई और आंधिया चली और उस घर पर टक्करें लगी तो वह गिरकर सत्यानाश हो गया। (मत्ती ७:२४–२७)।

प्रभु यीशु को परमेश्वर ने स्वर्ग से पृथ्वी पर हमारे लिये भेजा था। ताकि हम उसके जीवन से सीखें, कि परमेश्वर हमसे किस प्रकार के जीवनों को पृथ्वी पर व्यतीत करने की आशा रखता है। ताकि उसके जीवन को हम सब अपने जीवनों का आदर्श बनाएं। यीशु ने ऐसी शिक्षाएं दी थी, जिन्हें मानकर और जिन पर चलकर हम इस पृथ्वी पर ऐसे जीवन व्यतीत कर सकते हैं, जैसे जीवनों की आशा परमेश्वर हम से रखता है। पर कितने लोग हैं इस पृथ्वी पर जो आज यीशु की बातों को सुनकर उन्हें मानते और उन पर चलते हैं ? सुनते तो बहुतेरे हैं, पर बहुत ही थोड़े हैं जो वास्तव में उसकी बातों को मानते हैं। यहीं कारण है, कि यीशु ने कहा था, कि पृथ्वी पर अधिकांश लोग एक विनाशकारी चौड़े मार्ग पर चल रहे हैं। प्रभु ने कहा था, कि जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहरानेवाला तो एक है: अर्थात जो वचन मैनें कहा है, वही वचन न्याय के दिन उसे दोषी ठहराएगा। (यूहन्ना १२:४८)।

जीवन यद्यपि मनुष्य के लिये परमेश्वर की एक बहुत

बड़ी आशीष है, क्योकि उसने मनुष्य को नाश होने के लिये नहीं, पर अपने साथ, अपने स्वर्ग में, हमेशा के लिये रहने के लिये बनाया है। यहाँ तक, कि जब मनुष्य पाप करके स्वर्ग में जाने के योग्य नहीं रहा, तो परमेश्वर ने यीशु को मनुष्य का पाप से उद्धार करने के लिये जगत के लिये दे दिया था। जिसने क्रुस के ऊपर मृत्यु दन्ड़ प्राप्त करके सारे जगत के पापों का प्रायश्चित किया था। किन्तु, मनुष्य अपने जीवन के महत्व को नहीं समझता। अधिकांश लोगों का जीवन ऐसी कुप्पियों के समान हैं जो सूखी हुई हैं, जिनमे तेल नहीं है। यदि आप अन्धेरे में हों, और आप के पास कुप्पी या लैम्प तो हों, पर उस में तेल न हो, तो उस से क्या फ़ायदा। ठीक ऐसे ही अनेकों लोगों के जीवन है। प्रभु यीशु ने एक बार शिक्षा देकर कहा था कि "स्वर्ग का राज्य उन दस कुवारियों के समान होगा जो अपनी–अपनी मशालें लेकर दुल्हे से भेंट करने को चली। उन में पांच मूर्ख और पांच समझदार थीं। मूर्खो ने अपनी मशालें तो लीं, परन्तु अपने साथ तेल नहीं लिया। परन्तु समझदारों ने अपनी मशालों के साथ अपनी कुप्पियों में तेल भी भर लिया। जब दुल्हे के आने में देर हुई,तो वे सब ऊंघने लगीं और सो गई। आधी रात को धूम मची, कि देखो दूल्हा आ रहा है,उस से भेंट करने के लिये चलो। तब वे सब कुवारियां उठकर अपनी–अपनी मशालें ठीक करने लगीं। और मूर्खो ने समझदारों से कहा, कि अपने तेल में से कुछ हमें भी दो, क्योंकि हमारी मशालें बुझी जाती हैं। परन्तु समझदारों ने उत्तर दिया कि शायद हमारे और तुम्हारे लिये पूरा न हो, भला तो यह है, कि तुम बेचने वालो के पास जाकर अपने लिये मोल ले लो। पर जब वे मोल लेने जा रही थीं, तो दूल्हा आ पहुंचा, सो जो तैयार थीं, वे उसके साथ ब्याह के घर में चली गईं और द्वार बन्द किया गया। इसके बाद वे

दूसरी कुवांरिया भी आकर कहने लगीं,कि हे स्वामी, हे स्वामी, हमारे लिये द्वार खोल दे। पर उसने उत्तर दिया, कि मैं तुन्हें नहीं जानता।"

आज से दो हज़ार वर्ष पूर्व जब यीशु पलीस्तीन में रहता था, तो वहां का ऐसा रिवाज़ था, कि विवाह के अवसर पर कुछ कुवारियां दुल्हे से मिलने के लिये जाती थीं, और उसे जलती हुई मशालों के साथ विवाह के घर में लेकर जाती थीं। उसी का उदाहरण देकर यीशु ने यहां लोगो को एक बहुत बड़ा आत्मिक पाठ सिखाया था। अर्थात यह, कि अनेकों लोग उन मूर्ख कुवांरियों की तरह हैं जो पूरी तरह से दूल्हे से मिलने को तैयार नहीं थीं। उनके पास तैयार होने का समय और अवसर तो था। पर उन्होंनें उसका उचित उपयोग नहीं किया था। क्योंकि वे लापरवाह थीं। वे ऐसा सोचती थी, कि जब दूल्हा आएगा तब देखा जाएगा। क्या ऐसा ही दृष्टिकोण आज अनेक लोगों का नहीं है ? वे कहते हैं, कि अभी तो बहुत उम्र पड़ी है; जब मौत आएगी तब देखा जाएगा। या जब न्याय का दिन आएगा तब देखा जाएगा। पर वे यह नहीं समझते कि वह दिन कभी भी और किसी भी समय आ सकता है। और उस दिन वे उन मूर्ख कुवांरियों की तरह ठहरेंगें जिन्होंने आवश्यक तैयारी नहीं की थी।

प्रभु यीशु ने सिखाया था, कि चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाए रखों, क्योंकि किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता। और फिर इस बात को अच्छी तरह से समझाने के लिये यीशु ने एक दृष्टान्त देकर यूं कहा था, "कि किसी धनवान की भूमि में बडी उपज हुई। तब वह धनवान अपने मन में विचार करने लगा, कि मैं क्या करूं, क्योंकि मेरे यहां जगह नहीं, जहां अपनी उपज इत्यादि रखूं। और उस ने कहा, कि मैं

ऐसा करूंगा : कि मैं अपनी बखारियां तोड़कर उन से बड़ी बनाऊंगा, और वहां अपना सब अन्न और सम्पत्ति रखूंगा : और अपने प्राण से कहूंगा, कि प्राण अब तो तेरे पास बहुत वर्षों के लिये बहुत सम्पत्ति रखी है, चैन कर, खा, पी, सुख से रह। परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा, हे मूर्ख, इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा, तब जो कुछ तूने इकट्ठा किया है, वह किस का होगा ? और फिर यीशु ने कहा था कि, "ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिये धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं है।" (लूका १२:१५–२१)।

आज, ऐसे ही, अनेकों लोग स्वयं अपनी दृष्टि में तो बड़े ही समझदार हैं, काबिल हैं, किन्तु, परमेश्वर की नज़र में वे एक बहुत बड़े मूर्ख हैं। क्योंकि पृथ्वी पर रहने के लिये तो उनके पास सब कुछ है। और यदि नहीं है, तो वे अपनी सारी शक्ति और अपना सारा समय उसे प्राप्त करने के लिये लगा देते हैं, ताकि पृथ्वी पर उनका जीवन सुखमय बन सके। परन्तु उन्होंने उस अनन्तकाल में जाकर रहने के लिये कोई तैयारी नहीं की है, जिसमे पृथ्वी पर के इस जीवन के समाप्त हो जाने के बाद प्रत्येक मनुष्य प्रवेश करेगा।

क्या आप तैयार हैं ? जब आप इस पार्थिव देह को पृथ्वी पर छोड़कर जाएंगे, तो क्या आप उस जगह जाएंगें जहां धर्मी लोग प्रवेश करेंगे ? जहां वे लोग होंगे जिन में कोई पाप नहीं होगा ? जहां लोग परमेश्वर के साथ हमेशा की ज़िन्दगी पाएंग ? क्या आप वहां जाने के लिये तैयार हैं ? क्या आप ने परमेश्वर की इच्छा को मानकर और उस पर चलकर अपने आप को वहां जाने के योग्य बना लिया है ? परमेश्वर आपसे प्रेम करता है, और वह चाहता है कि आप और मैं और हम सब वहां उसके पास जाएं। और

इसलिए उस ने अपने एकलौते पुत्र यीशु मसीह को क्रूस के ऊपर बलिदान होने को दिया था, ताकि पापियों के लिये क्रूस पर उसकी मृत्यु के द्वारा वह सारे जगत के पापों का प्रायश्चित हो जाए। क्या आप जानते हैं, कि इस से भी पहले कि इस पृथ्वी पर आप का जन्म होता परमेश्वर ने आपे सारे पापो का प्रायश्चित हो जाए। क्या आप जानते हैं, कि इस से भी पहले कि इस पृथ्वी पर आप का जन्म होता परमेश्वर ने आपके सारे पापों का प्रायश्चित कर दिया था ? इसलिये नहीं, कि आप पाप में अपना जीवन बिताएं, पर इसलिये ताकि पाप से अपना मन फिराकर आप उसके पास वापस आ जाएं, और वैसा ही जीवन व्यतीत करें जैसा प्रभु यीशु मसीह का था। क्या आप उस में विश्वास करते हैं, कि वह आपके पापों प्रायश्चित करने को मरा था ? अपना मन फिराकर आज ही उसके पास आईए। क्योंकि प्रभु यीशु मसीह के भीतर आपको यह आशा मिल जाएगी कि आप इस जगत से परमेश्वर के पास जाने को तैयार हैं।

क्या आप पाप के लिये मर चुके हैं ?

इस कार्यक्रम में हम लोगों को उस सच्चे परमेश्वर के बारे में बताते हैं जिसने सारे जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपने वचन को एक मनुष्य बनाकर स्वर्ग से पृथ्वी पर भेज दिया, और हमारे पापों का दोष हम पर न लगाकर, उसने अपने उस एकलौते पुत्र को हमारे पापों के लिये दोषी ठहराया और हमारे स्थान पर उसने अपने उस पुत्र को हमारे पापों का दन्ड़ दिया। हम लोगों को बताते हैं, कि हम सब का परमेश्वर, जिसने सारे जगत को बनाया है,और जिसने हमें यह जीवन दिया है, एक सच्चा और ज़िन्दा परमेश्वर है। और वह हम सब को जानता है, वह हम से प्रेम करता हैं, वह दया और अनुग्रह का परमेश्वर है। वह हम से कोई बलिदान नहीं चाहता है, पर उसने स्वयं अपने आप को हमारे पापों के लिये दे दिया था। हमारा एक ऐसा परमेश्वर है, जिसने हम से ऐसा प्रेम रखा कि उसने हमारे पापों का दन्ड़ स्वयं अपने ऊपर उठा लिया, ताकि हम अपने पापों के कारण नाश होने से बच जाएं। हम चाहते हैं, कि अधिक से अधिक लोग उस सच्चे, प्रेमी, सर्वशक्तिमान तथा अनुग्रही परमेश्वर से परिचित हो जाएं। क्योंकि अधिकतर लोग ऐसा सोचेते हैं कि उन्हें स्वयं अपने पापों का दन्ड़ भरना आवश्यक है। उनके विचार मे प्रत्येक मनुष्य को अपने पापों का प्रायश्चित स्वयं ही करना पड़ेगा, चाहे उस कितने भी जन्म क्यों न लेने पड़े, जब तक प्रत्येक मनुष्य अपने प्रयत्नों से स्वयं अपने पापों का दन्ड नही भर देगा उसे मुक्ति नही मिल सकती।

परन्तु यह परमेश्वर की शिक्षा नहीं है, यह मनुष्य का विचार है। मनुष्य ऐसा सोचता है, कि उसके पापों का दन्ड और कोई दूसरा नहीं भर सकता। क्योंकि यह बात इन्सान को असम्भव लगती है। परन्तु जो बात मनुष्य के लिये असम्भव है, वही बात परमेश्वर के लिये सम्भव है। क्योंकि परमेश्वर, परमेश्वर है, और मनुष्य, मनुष्य है। यदि परमेश्वर केवल वही सब कर सकता है जो कि मनुष्य स्वयं कर सकता है, तो फिर मनुष्य और परमेश्वर में अंतर ही क्या रहा ? किन्तु, परमेश्वर इसीलिये परमेश्वर है क्योंकि वह वह काम भी कर सकता है जो मनुष्य की दृष्टि में असम्भव है। और एक ऐसा ही महान तथा अद्भुत काम परमेश्वर ने हमारे उद्धार के लिये भी किया है।

उसी सुसमाचार को बताने के लिये हम यह सुसमाचार का कार्यक्रम पेश करते हैं। हम आप को यह बताना चाहते हैं, कि आप स्वयं अपने पापों का प्रायश्चित नहीं कर सकते, और न ही ऐसा करने की आप को आवश्यकता है। क्योंकि यह काम परमेश्वर ने खुद आपकी जगह कर दिया है। उसने आपकें पापों का दोष स्वंय अपने ऊपर ले लिया है। और आप के प्रत्येक पाप का दन्ड़ उसने स्वयं अपने ही ऊपर उठा लिया है। और यह काम उसने उस समय किया था जब आज से दो हज़ार वर्ष पूर्व वह स्वंय प्रभु यीशु मसीह में होकर स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आ गया था। वह तेंतिस बरस तक इस जगत में रहा था। उसने महान शिक्षाएं दी थी, और बड़े–बडें अद्भुत काम किए थे। और उसने अपने चेलों को बताया था, कि किस प्रकार कुछ लोग उस से बैर करेंगें, और उसे पकड़ेगें, और उस पर झूठे दोष लगाएंगें, और उसे एक अपराधी की तरह क्रूस पर लटकाकर मारा जाएगा। किन्तु उसके चेले इसकी इस बात पर विश्वास ही नहीं कर सकते थे। क्योंकि वह तो महान और सर्वशक्तिमान

था। वह आंधी तूफ़ान को डांटकर थाम देता था, वह छूकर बीमारों को चंगा कर देता था, और वह बोलकर मुर्दों को ज़िन्दा कर देता था। पर वह यह सब करने को इस दुनिया में नहीं आया था। वह तो अपने प्राणों को देने के लिये आया था, वह तो अपने आप को जगत के पापों के लिये देने के लिये आया था। उसने अपनी देह के बारे में कहा था, कि वह जगत के पापों की छुडौती के लिये दी जाएगी और अपने लोहू के बारे में कहा था, कि वह जगत के पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाएगा। (मत्ती २६:२६–२८)। उसने एक गेहूं के दाने का उदाहरण देकर अपने चेलों से कहा था, कि "जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता वह अकेला रहता है, परन्तु जब मर जाता है तो बहुत फल लाता है। (यूहन्ना १२:२४)। यीशु ने कहा था, कि मैं एक गेहूं के दाने के समान हूं जिसके भीतर बहुतेरे और दाने कैद होते हैं। पर वे अन्य बहुत से गेहूं के दाने उस एक गेहूं के दाने में से निकलकर तब तक बाहर नहीं आते जब तक कि वह दाना स्वयं भूमि में पड़कर मर नहीं जाता। परन्तु जब वह एक दाना भूमि में पड़कर मर जाता है, तो उसी एक दाने से अनेकों अन्य नए दानों का जन्म होता है। यीशु ने कहा था, कि ऐसे ही उसका जीवन भी है। जब तक वह मरेगा नहीं तब तक उसके जीवन से किसी को कोई लाभ नहीं होगा। परन्तु जब वह मरेगा तो वह बहुतों के लिये हमेशा की ज़िन्दगी का कारण बन जाएगा। उसने कहा था, कि "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३:१६)।

परमेश्वर आप से प्रेम करता है। वह जानता है, कि आप कमजोर और निर्बल हैं। वह यह भी जानता है कि

आप स्वयं कुछ भी करके अपने पापों से मुक्ति नहीं पा सकते । वह जानता है कि आप खुद अपने पापों का प्रायश्चित नहीं कर सकते । इसीलिये वह स्वयं स्वर्ग को छोड़कर जमीन पर आ गया । उसने आपके और मेरे और सारे जगत के पापों की जिम्मेवारी स्वयं अपने ऊपर ले ली । उसने आपके और मेरे और सारे जगत के पापों का दन्ड भी स्वंय अपने ऊपर उठा लिया । वह हमारे लिये कंगाल बन गया ताकि हम धनी बन जाएं । (२ कुरिन्थियों ८:९) । उसने हमारे पापों को अपने ऊपर ले लिया ताकि हम पवित्र बन जाएं । परमेश्वर के वचन की पुस्तक बाइबल में लिखा है कि "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं ।" (२ कुरिन्थियों ५:२१) । सो कितना महान और प्रेमी है हमारा परमेश्वर । कैसा अनुग्रही और दयावन्त है हमारा परमेश्वर । तौभी, जबकि हमारे परमेश्वर ने इतना बड़ा महान् कार्य हम सबके लिये किया है, अनेकों लोग अपना जीवन पाप मे ही व्यतीत कर रहे हैं । यदि आज या कल उनकी मृत्यु हो जाए, तो उनके पास यह आशा नहीं है कि वे स्वर्ग में परमेश्वर के पास जाएंगें । उनके पास केवल यह आशा है, कि अपनी मृत्यु के बाद वे फिर से जन्म लेकर किसी न किसी रूप मे फिर से इस संसार में आएंगें, और अपने पापों का बोझ स्वयं ढोएंगे ।

क्या यही आशा आज आपकी भी है ? लेकिन मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि आप आज अपने दृष्टिकोण को बदल सकते हैं, आप आज अपनी आशा को बदल सकते हैं । क्योंकि परमेश्वर ने आपके पापों का प्रायश्चित स्वयं कर दिया है । अब आप इस जगत में इस आनन्द के साथ रह सकते हैं कि आपको पापों से मुक्ति मिल चुकि हैं । और इस आशा के साथ इस संसार से जाने के लिये आप अपने आप

को तैयार कर सकते हैं, कि जब आप यहां से जाएंगे तो आप परमेश्वर के पास उसके स्वर्ग में जाएंगे, और वहां हमेशा उसके साथ रहेंगे। और यह आनन्द और यह आशा आप को तब मिल सकती है अगर आप अपने सारे मन से यीशु मसीह में यह विश्वास लाएंगे कि वह आपके पापों का प्रायश्चित करने को मारा गया था; और जब आप प्रत्येक पाप से अपना मन फिराएंगे और यह निश्चय करेगें कि अब आप आगे को पाप में जीवन नहीं बिताएंगें, और जब आप अपने सब पापों की क्षमा पाने के लिये यीशु की आज्ञा मानकर जल में गाड़े जाकर बपतिस्मा लेंगे।

पवित्र बाइबल में लिखा है: " सो हम क्या कहें ? क्या हम पाप करते रहें कि अनुग्रह बहुत हो ? कदापि नहीं। हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को क्योंकर उस में जीवन बिताएं ? क्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाडे गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओ मे से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं, कि हमारा पुराना मनुष्य उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाएं, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें। क्योंकि जो मर गया वह पाप से छुटकर धर्मी ठहरा। सो यदि हम मसीह के साथ मर गए, तो हमारा विश्वास यह है कि उसके साथ जाएंगे भी। क्योंकि यह जानते हैं कि मसीह मरे हुओं में से जी उठकर फिर मरने का नहीं; पर आवश्यकता इस बात की है, कि आज हम में से इन सब बातों के बारे में बता

दिया है। उस पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं होगी। क्योंकि वह जो मर गया तो पाप के लिये एक ही बार मर गया; परन्तु जो जीवित है, तो परमेश्वर के लिये जीवित है। ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु मे जीवित समझों। इसलिये पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज्य न करे,कि तुम उसकी लालसाओं के आधीन रहो। और न अपने शरीर के अंगों को धर्म के अथियार होने के लिये पाप को सौपों, पर अपने आप को मरे हुओं मे से जी उठा जानकर परमेश्वर को सौपों, और अपने अंगों को धर्मै के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपों।" (रोमियों ६:१–१३)।

परमेश्वर आप को एक नई ज़िन्दगी देना चाहता है। वह आप को एक नई आशा देना चाहता है। और यह नई ज़िन्दगी और नई आशा हमें देने के लिये कैसा महान् बलिदान परमेश्वर ने हमारे लिये दिया है। वह आप से चाहता है कि आप पाप के लिये उसी प्रकार मर जाएं जैसे कि मसीह हमारे पापों के लिये मरा था। और फिर एक नए जीवन की चाल चलें; वह नया जीवन, जो हमें प्रभु यीशु मसीह से मिलता है।

क्या आप ऐसा करेंगें ?

परमेश्वर ने मनुष्य को क्यों बनाया है ?

इस समय हम इस विषय पर विचार करेंगे कि परमेश्वर ने इन्सान को क्यों बनाया है। कभी–कभी लोग जानना चाहते हैं, कि जबकि इस पृथ्वी पर इतने अधिक दुख हैं, ग़रीबी हैं, और बीमारियां हैं, जिनका सामना लोगों को करना पड़ता है, तो फिर परमेश्वर ने मनुष्य को क्यों बनाया है ? क्या वह चाहता है कि मनुष्य दुख उठाए ? तो फिर वह सभी दुखों को और बीमारियों और परेशानियों को क्यों नही जगत से उठा लेता? वह तो सर्व–शक्तिमान है और सबसे प्रेम करता है, फिर वह हम पर दुख क्यों क्यों भेजता है ? फिर कुछ लोग यह भी जानना चाहते हैं, कि जब कि परमेश्वर सर्वज्ञानी है, यानि उसे भूत, और वर्तमान और भविष्य का ज्ञान है, तो वह अवश्य ही जानता होगा कि मनुष्य पाप करेगा, और यदि वह जानता था कि मनुष्य पाप करेगा, तो फिर उसने उसे बनाया ही क्यों है ?

सबसे पहले, इन बातों के सम्बन्ध में मैं आप से यह कहना चाहूंगा, कि अकसर लोग परमेश्वर को स्वयं अपने ही दृष्टिकोण से देखना चाहते हैं। परमेश्वर के बारे मे उनकी एक अपनी धारणा है, और उसी धारणा के आधार पर वे उसे देखना चाहते हैं। कुछ लोग परमेश्वर को एक "विशाल शक्ति" के रूप में मानते हैं। वे इस प्रकार सोचते है, कि परमेश्वर को अपनी अपार शक्ति का प्रदर्शन करके पृथ्वी पर से सारे दुखों को और ग़रीबी को समाप्त कर देना चाहिए। कुछ अन्य लोग परमेश्वर को एक बहुत बड़े प्रेम

के रूप में देखते हैं और उनका विचार है, कि परमेश्वर तो ऐसा प्रेमी है कि मनुष्य चाहे कुछ भी करे परमेश्वर सब को क्षमा कर देगा। ऐसे ही, कुछ लोग परमेश्वर को एक बडे जज या न्यायधीश के रूप में देखते हैं, जो पृथ्वी पर लोगों को उनके बुरे कामों का दन्ड़ दे रहा है और अच्छे कामों के बदले में उन्हें अच्छी–अच्छी वस्तुएं दे रहा है। अब ऐसा नहीं है, कि परमेश्वर ने अपने आप को मनुष्यों पर प्रकट नहीं किया है या उन्हें बताया नहीं है कि वास्तव मे वह कौन है; उसके क्या गुण हैं, और मनुष्य के साथ उसका क्या सम्बन्ध है। पर मनुष्य परमेश्वर को परमेश्वर के दुष्टिकोण से न देखकर स्वंय अपने ही दृष्टिकोण से उसे देखने और मानने का प्रयत्न करता है। इसी कारण, न तो वह परमेश्वर को वास्तव में पहचान पाता है, और न ही वह इस बात को जान पाता है, कि परमेश्वर ने उसे क्यों बनाया है।

जब लोग शादी–शुदा हो जाते हैं तो वे चाहते हैं, कि उनके पास सन्तान हो। अब क्या वे इस बात से परिचित नहीं होते, कि जब उनके पास बच्चा होगा तो उन्हें कितनी परेशानियों का भी सामना करना पड़ेगा ? कष्ट और पीड़ा के साथ माताएं अपने बच्चों को जन्म देती हैं। फिर उनका मैला उठाना पड़ता हैं; गीले बिस्तरों पर सोना पड़ता है। दिन रात उनका ध्यान रखना पड़ता है। और जब वे बीमार पड़ जाते हैं तो डॉक्टरों के चक्कर भी लगाने पड़ते हैं, और रातों को उनके कारण जागना भी पड़ता है। लेकिन फिर भी लोग चाहते है, कि उनके पास सन्तान हो। और सभी बच्चे आगे चलकर अच्छे भी नहीं निकलते। बहुतेरे और अधिकतर बड़े होकर अपने माता–पिता के लिए एक सिरदर्दी बन जाते हैं। परन्तु ये सब जानते हुए भी लोग सन्तान की कामना करते हैं। देख रहे हैं आप कि मैं आप को क्या

दिखाने का प्रयत्न कर रहा हूं ?

निसंदेह, परमेश्वर जानता था, कि जिस मनुष्य को वह बना रहा है, वह अवश्य ही पाप करेगा– परन्तु फिर भी उसने मनुष्य को बनाया। और अपने स्वरूप और अपनी समानता पर उस ने उसे उत्पन्न किया, अथार्त परमेश्वर ने मनुष्य को एक आत्मिक प्राणी बनाया। और यह जानते हुए, कि मनुष्य पाप करके उससे दूर हो जाएगा, परमेश्वर ने मनुष्य को बनाने से पहले ही उसके पापो का प्रायश्चित करने को एक बलिदान नियुक्त भी कर दिया था। इसीलिये परमेश्वर के पुत्र प्रभु यीशु मसीह के बारे में बाइबल में लिखा है, कि वह जगत की उत्पत्ति के समय से घात किया हुआ मेम्ना है। (प्रकाशितवाक्य १३:८)। यानि परमेश्वर के मन में, उसकी योजना में, पापियों के लिये प्रभु यीशु मसीह का बलिदान जगत की उत्पत्ति के समय से था। वह जानता था कि मनुष्य पाप करेगा–– परन्तु उसने अपने एकलौते पुत्र यीशु मसीह में मनुष्य को पाप से छुटकारा पाने का रास्ता भी दिया है। वे सब जो जगत की उत्पत्ति से लेकर प्रभु यीशु मसीह के क्रूसारोहण के समय तक परमेश्वर की इच्छानुसार चले थे, उन सब का उद्धार भी प्रभु यीशु मसीह के बलिदान के द्वारा उसी प्रकार होगा, जिस प्रकार उन सब का उद्धार होगा जो आज उसकी इच्छा के अनुसार चलते हैं। आरम्भ में जब परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया था तो उस समय परमेश्वर स्वंय लोगों से बोलता था। फिर, बाद में परमेश्वर ने लोगों को अपनी एक लिखी हुई व्यवस्था दी थी, जिसे आज हम बाइबल में "पुराना नियम" कहते हैं। किन्तु प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आज परमेश्वर ने हमें अपना नया नियम दिया है, जिसे हम आज परमेश्वर की पुस्तक बाइबल में पढ़ते हैं। बाइबल में परमेश्वर ने प्रत्येक मनुष्य के लियें अपनी इच्छा को प्रकट किया है। उसने बताया है कि उसने मनुष्य को

क्यों बनाया है, वह मनुष्य से क्या चाहता है, और मनुष्य को परमेश्वर की संगति में रहने के लिये क्या करना चाहिए।

परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी संगति में रहने के लिये बनाया था। जैसे हम अपने बच्चों के साथ रहना चाहते हैं। किन्तु पाप के कारण मनुष्य परमेश्वर से अलग हो गया। क्योंकि परमेश्वर पवित्र और धर्मी है। वह पाप तथा अधर्म के साथ संगति नहीं रख सकता। परन्तु शायद आप कहें कि परमेश्वर ने मनुष्य को पाप करने से रोका क्यों नहीं ? वास्तव मेंआरम्भ से ही परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी आज्ञाएं दी है, और उसने उसे क्या नहीं करना चाहिए और क्या वहीं करना चाहिए। परन्तु मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञा पर चलना नहीं चाहा, और जिस काम को करने को परमेश्वर ने मनुष्य को मना किया था, उसने वहीं किया। परमेश्वर ने मनुष्य को अपने समान बनाया था–अर्थात एक ऐसा प्राणी जिसके पास एक स्वतंत्र इच्छा थी जो अपनी मर्जी से चुनाव कर सकता था। मनुष्य को परमेश्वर ने एक मशीनी पुतले या रोबौट की तरह नहीं बनाया था, जिसे वह स्वयं अपनी इच्छानुसार इस्तेमाल कर सकता था। क्योंकि परमेश्वर चाहता था, और चाहता है, कि मनुष्य स्वयं अपनी इच्छा से उसका आदर करे और उसका भय माने, उससे प्रेम रखे, और उसकी आज्ञाओं पर चले। परमेश्वर ने मनुष्य को पशुओं की समानता पर नहीं, पर स्वयं अपनी समानता पर बनाया था। वह चाहता था, और चाहता है कि मनुष्य उसी की तरह पवित्र जीवन व्यतीत करे, उसकी संगति में रहे। परमेश्वर नहीं चाहता की मनुष्य दुख उठाए और नहीं वह किसी के ऊपर कष्ट या दुख भेजता है। परमेश्वर तो सदा हमारा भला चाहता है, वह जो कुछ भी करता है, हमारी भलाई के लिये ही करता है। क्योंकि जबकि हमारे शारीरिक पिता हमारा बुरा नहीं सोचते, तो हमारा स्वर्गीय पिता हमारा बुरा कैसे

सोच सकता है ?

तो फिर हमारे ऊपर दुख और तकलीफें क्यों आते हैं? क्यों हम दुर्घटनाओं के शिकार होते हैं ? इसका सबसे बड़ा कारण है पाप । मनुष्य के बुरे काम, बुरी आदतें, लोभ और स्वार्थ जो मनुष्य के मन में बसा हुआ है । अनेकों हत्याओं, दुर्घटनाओं और बीमारियों का सीधा सम्बन्ध मनुष्य के पाप से है । और उनका परिणाम या फल बहुतेरे निरापराध और निर्दोष लोगों को भी भुगतना पड़ता है । हमें अपने दुखों के लिये परमेश्वर को दोषी नहीं ठहराना चाहिए । और न ऐसा कहना चाहिए कि परमेश्वर ने यह विपत्ति मुझ पर क्यों भेजी है, या परमेश्वर ने ऐसा मेरे साथ क्यों किया है । क्योंकि परमेश्वर ने हमे दुख झेलने या दुख पाने के लिये नहीं बनाया है । वह तो हमारी भलाई की कामना करता है, वह हमें सुखी और खुश देखना चाहता है । बाइबल में एक जगह इस प्रकार लिखा है, कि परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई भी नाश हो, वरन वह यह चाहता है कि सबको मन फिराव का अवसर मिले । (२ पतरस ३:६) ।

पाप के कारण मनुष्य नाश हो रहा है, न केवल इस पृथ्वी पर, परन्तु इस पृथ्वी के जीवन के बाद भी उसके पास कोई आशा नहीं है । वह एक ऐसे अनन्त काल में रहने के लिये जा रहा है जहां से वह कभी वापस नहीं आएगा, और जहां वह हमेशा के लिये परमेश्वर से अलग और दूर होकर रहेगा । किन्तु परमेश्वर ऐसा नहीं चाहता । वह नहीं चाहता, कि कोई भी मनुष्य अपने पाप के कारण उससे दूर होकर नरक में हमेशा का दन्ड पाए । इसीलिये बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा, कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए । परमेश्वर नहीं चाहता, कि हममे से कोई भी पाप के कारण नरक में

अनन्त दन्ड पाए, पर वह यह चाहता है कि हम उसके स्वर्ग में हमेशा की जिन्दगी पाएं। और इसे सम्भव करने के लिये उसने एक बहुत बड़ा बलिदान दिया है, अर्थात उसे अपने एकलौते पुत्र यीशु मसीह को सारे जगत के पापों का प्रायश्चित बनाकर बलिदान होने को दे दिया है। परमेश्वर आप से प्रेम करता है। वह आप को बचाना चाहता है। वह आप को एक ऐसा जीवन देना चाहता है जिसमे सच्ची शान्ति और सच्चा आनन्द है। और वह जीवन आप को तभी मिल सकता है, अगर आप पाप और सांसारिक बातों से अपना मन फिराकर अपना जीवन उसे सौंप देंगे और उसके बताए हुए उस मार्ग पर चलेंगे जो उसके पुत्र यीशु मसीह में हमें मिलता है।

परमेश्वर ने हमें बाइबल क्यों दी है ?

सत्य सुसमाचार के इस कार्यक्रम में आपका ध्यान उन बातों पर दिलाया जाता है जिनके बारे में हम बाइबल में पढ़ते हैं। क्योंकि हमारा विश्वास है, कि बाइबल को परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया है। इस पुस्तक में परमेश्वर ने मनुष्य के लिये अपनी इच्छा को प्रकट किया है। एक ही परमेश्वर है, जिसने हम सबको जीवन दिया है। और उसने अपनी एक ही इच्छा को, एक ही मर्ज़ी को, दुनिया के सारे लोगों के लिये अपनी बाइबल में प्रकट किया हैं। अनेकों लोग बाइबल को केवल इसलिये नहीं पढ़ते क्योंकि वे सोचते हैं कि बाइबल किसी एक धर्म की किताब हैं, और क्योंकि हम उस घर्म को नहीं मानते, इसलिये हमे बाइबल को पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं है। किन्तु ऐसा सोचना गलत है। परमेश्वर ने मनुष्यों को बनाया है, धर्मों को नहीं। धर्मों का निर्माण मनुष्यों ने स्वयं किया है। परमेश्वर ने सभी मनुष्यों के लिसे अपने एक मार्ग को प्रकट किया है, जिस पर चलकर हम उसकी नज़दीकी में रह सकते हैं और उसके पास पहुंच सकते हैं। परन्तु मनुष्यों ने अपने लिये अनेकों भिन्न–भिन्न मार्गों को बना लिया है। परमेश्वर एकता का परमेश्वर है वह शान्ति का परमेश्वर है। परमेश्वर फूट नहीं डालता, वह झगड़ा नहीं करवाता, परन्तु वह हम सब को मेल मिलाप के साथ रहने के लिये कहता है।

प्रभु यीशु ने बाइबल में एक जगह इस प्रकार कहा था, कि जो कुछ तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें

तुम भी उनके साथ वैसा ही करो । (मत्ति ७:१२) । अब अगर हम सब वास्तव में अन्य लोगों के साथ वैसा ही व्यवहार करने लगें जैसा कि हम चाहते है कि लोग हमारे साथ करें, तो यह सारा का सारा संसार एक दम बदल जाएगा । ईर्ष्या, बैरभाव, दुश्मनाई, हत्या और स्वार्थ जैसी चीजें खत्म हो जाएंगी । क्योंकि हम नहीं चाहते कि लोग हमारे साथ इस तरह के काम करें । परन्तु हम चाहते हैं कि लोग हमारा आदर करें, हमारे बारे में अच्छी बातें कहें, हमारी बुराई न करें, हम पर दोष न लगाएं । पर क्या हम अन्य लोगों के साथ ऐसा करते हैं ? बाइबल में प्रभु यीशु ने यह भी कहा था, कि "दोष मत लगाओ, कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए । क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा, और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा । तू क्यों अपने भाई की आंख के तिनके को देखता है, और अपनी आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता और जब तेरी आंख में लट्ठा है तो तू अपने भाई से क्योंकर कह सकता है, कि ला मैं तेरी आंख से तिनका निकाल दूं ?" (मत्ती ७ : १–४) । अकसर हम दूसरे लोगों के भीतर बुराई ढूढ़ते हैं । अन्य लोगों पर हम दोष लगाते हैं । पर क्या कभी हम अपने आप को जांचकर देखते हैं ?

परमेश्वर ने हमे बाइबल दी है, और उसमे हमे यह बताया है, कि किस प्रकार हम एक–दूसरे के साथ मिलकर रह सकते हैं । और बाइबल में परमेश्वर ने हमें यीशु मसीह के बारे में बताया है, कि हम उसे अपने जीवनों का आदर्श बनाएं । वह महान और सर्व शक्तिमान था, किन्तु फिर भी उस ने अपने आप को दीन बनाया था, और एक दास का सा जीवन उसने व्यतीत किया था । वह गाली सुनकर किसी को गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को धमकी

नहीं देता था। (फिलिप्पियों२ :५–८; १ पतरस २: २२–२४)। उसने कभी किसी को शाप नहीं दिया था, कभी किसी का बुरा नहीं चाहा था। परन्तु इसके विपरीत उसने यह सिखाया था, कि अपने बैरियों के साथ प्रेम रखो, और अपने सताने वालों के लिये प्रार्थना करो, जिससे तुम अपने स्वर्गीय पिता की संतान ठहरोगे, क्योंकि वह भलों और बुरों दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मियों और अधर्मियों दोनों के लिसे मेंह बरसाता है। क्योंकि यदि तुम अपने प्रेम रखने वालों से ही प्रेम रखें तो तुम्हारे लिये क्या फल होगा? इसलिये चाहिए कि तुम सिद्ध बनो, जैसे तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।" (मत्ती ५ : ४४–४८)। परमेश्वर चाहता है, कि हम सब उसके समान बनें, जैसे कि उसने आरम्भ में मनुष्य को अपनी समानता पर बनाया था। और इसी बात को सिखाने के लिये उसने हमें बाइबल दी है। और इसी उद्देश्य से उसने अपने वचन को यीशु मसीह के रुप में इस पृथ्वी पर भेजा था।

प्रभु यीशु ने सिखाया था, और बाइबल में लिखा है, कि "अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो, जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इक्ट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा और न काई बिगाड़ते हैं। और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं। क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा।" (मत्ती ६: १९–२१)। परमेश्वर चाहता है, कि हम अपना मन पृथ्वी पर की वस्तुओं पर न लगाएं परन्तु स्वर्गीय बातों पर अपना मन लगाएं। क्योंकि पृथ्वी पर हम सदा नहीं रहेंगे, हमें यहां से एक दिन अवश्य ही जाना है। और परमेश्वर की इच्छा है, कि जब हम यहाँ से जाएं तो हम उसके स्वर्ग में प्रवेश करें। और स्वर्ग में प्रवेश करने के लिये आवश्यक है कि हम अपना धन स्वर्ग में इकट्ठा

करें, क्योंकि जहां तेरा धन होगा, यीशु ने कहा था, वहां तेरा मन भी लगा रहेगा। पर अपना धन हम स्वर्ग में किस प्रकार इकट्ठा कर सकते हैं ? वहां हम रुपया, पैसा या सोना या चांदी नहीं भेज सकते। तो फिर हम किस प्रकार अपना धन स्वर्ग पर इकट्ठा कर सकते हैं ? केवल एक ही तरीका है, स्वर्ग पर धन इकट्ठा करने का, और वह यह है कि पृथ्वी पर हम अपने जीवन उस तरह से व्यतीत करें जैसे कि परमेश्वर चाहता हैं, जैसे कि उसने अपनी पुस्तक बाइबल में हमें बताया है। प्रभु यीशु ने सिखाया था, कि लोग दिया जलाकर किसी बरतन में नहीं रखते, पर किसी ऊंचे स्थान पर रखते हैं, और तब उससे घर में सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है। उसी प्रकार यीशु ने कहा था, तुम्हारा उजियाला भी मनुष्यों के सामने ऐसे चमकना चाहिए कि लोग तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें। (मत्ती ५: १६)। जो हम बोलते हैं, जो हम करते हैं, हमारा व्यवहार हमारा चाल–चलन सब कुछ परमेश्वर की इच्छा के अनुसार होना चाहिए। और सही महत्त्वपूर्ण बात हमें सिखाने के लिये परमेश्वर ने हमें बाइबल दी है। यानि बाइबल जितनी आवश्यक आपके लिये है उतनी ही आवश्यक मेरे लिये भी है। अगर पाप संसार में नहीं होता, यदि मनुष्य के जीवन में पाप नहीं होता, तो फिर बाइबल की हमें कोई आवश्यकता नहीं होती। जैसे कि संसार में यदि कभी कोई बीमार नहीं पड़ता, अगर बीमारीयां नहीं होती तो हमें हस्पतालों की कोई आवश्यकता नहीं होती, और न ही हमें डॉक्टरों की जरुरत होती। बाइबल न केवल हमें यह बताती है, कि पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य पापी है, और अपने पाप के कारण परमेश्वर से दूर और अलग है, और उसमे आत्मिक जीवन नहीं है। परन्तु बाइबल हमें यह भी बताती है कि पाप का अर्थ क्या है और परमेश्वर ने हमके पाप से मुक्ति दिलाने के लिये

और पाप से बचे रहने के लिया क्या किया है। परमेश्वर ने मनुष्य को केवल बनाया ही नहीं है, परन्तु उसने मनुष्य को अपनी समानता पर बनाया है। उसमे समझ है, वह अच्छाई और बुराई को पहचान सकता है। लेकिन परमेश्वर की इच्छानुसार उसके समान जीवन व्यतीत न करके प्रत्येक मनुष्य उसकी इच्छा के विरोध में चल रहा है। और इसी बात को बाइबल में पाप कहा गया है–जिसके कारण प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर से अलग है। किन्तु परमेश्वर नहीं चाहता कि मनुष्य उससे अलग रहे। सो मनुष्य के पापों का प्रायश्चित करने को उसने अपने वचन को यीशु मसीह के रुप में संसार में भेज दिया । परमेश्वर की इच्छा से, और उसके ठहराए समय पर, यीशु पर झूठे आरोप लगाए गए और उसे दोषी ठहराया गया, और एक अपराधी की तरह उसे क्रूस पर चढ़ाकर मृत्यु दन्ड दिया गया। यीशु, बाइबल कहती है, जगत के पापों का प्रायश्चित है। और जो कोई भी उसमे अपने सारे मन से विश्वास लाता है और पाप से अपना मन फिराकर उसकी आज्ञा मानकर जल में बपतिस्मा लेता है, वह यीशु की मृत्यु के कारण अपने पापों से उद्धार पाता है, अर्थात यीशु के क्रूस पर बलिदान के कारण परमेश्वर उसके सब पापों को क्षमा कर देता है। आप भी यीशु मसीह में विश्वास लाकर और उसकी आज्ञा को मानकर अपने सारे पापों से क्षमा प्राप्त कर सकते हैं। और केवल यही, परन्तु परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह में अपना जीवन व्यतीत करने के कारण आप पाप करने से भी बचे रह सकते हैं। क्योंकि यीशु से हम ऐसी–ऐसी बातें सीखते हैं जो हमें पाप करने से रोकती हैं।

हम जगत में हैं, और पाप जगत में हैं, और पाप के कारण प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर से अलग और उससे दूर है। यही बात हमे बताने के लिये परमेश्वर ने हमें बाइबल दी

है। क्योंकि वह हम से प्रेम करता है। और वह हमें पाप और पाप के भयानक परिणाम से बचाना चाहता है। और हमारे लिये परमेश्वर का प्रेम इस बात से प्रकट है कि उसने अपने एकलौते पुत्र को हमारे पापों का प्रायश्चित करने को बलिदान कर दिया सो हम इस पाठ से क्या सीखते हैं ? हम यह सीखते हैं, कि परमेश्वर ने हमारा वर्तमान और हमारा भविष्य हमें से क्या चाहता है। और उसने हमारे लिये क्या किया है। और किस प्रकार हम अपने पापों से मुक्ति प्राप्त करके उसकी इच्छानुसार पृथ्वी पर अपना जीवन व्यतीत कर सकते हैं सो "सब कुछ सुना गया," बाइबल में एक जगह लिखा है, "अंत की बात यह है, कि परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यही है। क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी न्याय करेगा।" (सभोपदेशक १२ :१३,१४)।

चाहे इस बात को आप स्वीकार करें या न करें परन्तु यह बाइबल की एक सच्चाई है, कि एक दिन हम सब को अपने–अपने जीवनों का लेखा परमेश्वर को देना पड़ेगा। क्या आप उसके सामने आने को तैयार हैं ? क्यां वह आप को स्वीकार करेगा ? क्या आप अपना जीवन उसकी इच्छा पर चलकर व्यतीत कर रहे हैं ? मेरी आशाा है कि आप इन सब बातों पर सारी गम्भीरता के साथ विचार करेंगे।

क्या मैं परमेश्वर की इच्छा को जान सकता हूँ ?

हम सब का यह विश्वास है, कि एक परमेश्वर है। और यदि हम में से कोई ऐसा विश्वास नहीं करता है, तो उसे इस बात पर विश्वास करना चाहिए। क्योंकि यदि कोई नमूना है, तो उस नमूने का बनाने वाला भी कोई है। अगर कोई मशीन है, तो उस मशीन को किसी ने बनाया भी है। प्रत्येक घर का कोई न कोई बनाने वाला है। और हर एक चित्र में किसी न किसी कलाकार ने रंग भरे हैं। इसी प्रकार आकाश में चमकने वाले सूरज, चांद और सितारे और उसके नीचे उड़ने वाले सारे परिन्दें इस बात का सबूत हैं कि उन्हें किसी ने बनाया है। ज़मीन पर रेंगने वाले और चलने वाले सभी जीव–जन्तु हमारा ध्यान इस बात पर दिलाते हैं कि उन्हें किसी ने बनाया है। समुंद्र में भांति–भांति के रंग बिरंगे, छोटे और बड़े जन्तु तथा जीव पाए जाते है, और वे सब भी हमारा ध्यान इसी बात की और दिलाते हैं, कि उनका भी कोई बनाने वाले हैं। और इन्सान जिसके शरीर का एक–एक अंग इतनी खूबी और अद्भुत ढंग से बनाया गया है, स्वयं इस बात का एक बहुत बड़ा प्रमाण है कि वह, जिसने उसे बनाया है, वास्तव में बड़ा ही महान् और सर्वशक्तिमान है। और उसी को, जिसने सारे संसार को और आकाश और पृथ्वी को, और उनमें की प्रत्येक वस्तु को बनाया है हम परमेश्वर या परमात्मा कहते हैं।

इस पृथ्वी पर केवल एक ही ऐसी पुस्तक है, जो हमें यह बताती है कि वह परमेश्वर कौन है, और किस प्रकार

उसने इस विशाल जगत को और मनुष्य को बनाया है। और उस किताब का नाम है, बाइबल। हमारी इस बाइबल में छियासठ पुस्तकें हैं। और उनमें से सबसे पहली किताब का नाम है "उत्पत्ति की पुस्तक"। जैसे ही हम बाइबल को खोलकर पढ़ते हैं, हमारा ध्यान सबसे पहले इस पुस्तक में इस बात पर दिलाया गया है, कि "आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।" और फिर किस तरह से प्रत्येक वस्तु को परमेश्वर ने सजाया था, उसका पूरा विवरण भी हमें मिलता है। परमेश्वर ने कहा था कि उजियाला हो तो उजियाला हो गया था। और फिर परमेश्वर ने उजियाले को अंधियारे से अलग करके रात और दिन को बनाया था। इसी प्रकार उत्पत्ति की पुस्तक हमें बताती है, कि आकाश में और पृथ्वी पर और समुद्र में जो कुछ भी पाया जाता है, उन सबको परमेश्वर ने आरम्भ में अपने वचन की शक्ति से उत्पन्न किया था। और सब कुछ बनाने के बाद परमेश्वर ने मनुष्य को नर और नारी करके बनाया था। और एक बड़ी ही खास बात मनुष्य की सृष्टि के विषय में हम यह पढ़ते हैं, कि इन्सान को आरम्भ में परमेश्वर ने जब बनाया था, तो उसे परमेश्वर ने अपने ही स्वरुप पर और अपनी ही समानता पर उत्पन्न किया था। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है, कि परमेश्वर मनुष्य जैसा है, या मनुष्य परमेश्वर की तरह लगता है, या परमेश्वर का कोई आकार या रुप है जिसे देखा जा सकता है। क्योंकि परमेश्वर तो आत्मा है, और वह पवित्र–आत्मा है। और इसी समानता पर परमेश्वर ने मनुष्य को आरम्भ में बनाया था। अर्थात्, एक पवित्र आत्मिक–प्राणी। और इसी कारण से जबकि आकाश और पृथ्वी पर की प्रत्येक वस्तु का अस्तित्व एक न एक दिन मिट जाएगा, और उसमे मनुष्य की देह भी शामिल है, जिस आरम्भ में परमेश्वर ने भूमि की मिट्टी से रचा था, परन्तु

आत्मिक मनुष्य अर्थात् मनुष्य के भीतर जो आत्मा है, उसका कभी अन्त नहीं होगा। क्योंकि आत्मा एक ऐसी वस्तु है जिसे न तो देखा जा सकता है, और न उसे या उसके अस्तित्व को मिटाया जा सकता है।

आप एक आत्मिक प्राणी है, और इसलिये आप सदा वर्तमान रहेंगे। पर इस पृथ्वी पर नहीं। क्योंकि इस जमीन पर न तो कोई वर्तमान रहा है, और न रहेगा। क्योंकि यह पृथ्वी और इस पर की प्रत्येक वस्तु नाशमान है। एक दिन हम सब अपने–अपने नाशमान शरीरों को इसी पृथ्वी पर छोड़कर यहां से सदा के लिये चले जाएंगे। फिर हम यहां कभी वापस नहीं आएंगे। पर हम यहां से कहां जाएंगे ?

जिस परमेश्वर ने हम सबको बनाया है, उसने हमे अपने बारे में और हमारे बारे में सब कुछ बताया है। यीशु मसीह, जिसे परमेश्वर ने स्वर्ग से पृथ्वी पर भेजा था, ताकि वह परमेश्वर की मर्जी को इन्सानों पर प्रकट करे, उसने कहा था, कि इन्सान केवल रोटी ही से नहीं पर हर एक उस वचन से जिंदा रहेगा जो परमेश्वर ने दिया है। (मत्ती ४ :४)। अपनी देह के लिये मनुष्य को रोटी की आवश्यकता है, पर रोटी उस की आत्मिक आवश्यकता को पूरा नहीं कर सकती। इन्सान की इसी महत्त्वपूर्ण आवश्यकता को पूरा करने के लिये परमेश्वर ने अपने वचन को मनुष्य की देह पहनाकर इस जमीन पर भेजा था। (यूहन्ना २:१,२,१४)। यही कारण है कि यीशु ने लोगों से कहा था, कि "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दन्ड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।" इसलिये "जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दन्ड की आज्ञा नहीं

होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका, इसलिये कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र पर विश्वास नहीं किया। और दंड की आज्ञा का कारण यह है, कि ज्योति जगत में आई है, पर मनुष्यो ने अंधकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उन के काम बुरे थे। क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए। परन्तु जो सच्चाई पर चलता है, वह ज्योति के निकट आता है, ताकि उसके काम प्रकट हों, कि वह परमेश्वर कि ओर से किए गए हैं" (यूहन्ना ३: १६–२१)।

यीशु इस पृथ्वी पर एक ज्योति की तरह आया था। उसने मनुष्यों के कुछ ऐसे अहम सवालों के ऊपर प्रकाश डाला था, जिसका जवाब इन्सान शताब्दियों से ढूंढ रहा था। यीशु ने बताया था, कि परमेश्वर सृष्टि की किसी निर्जिव वस्तु के समान नहीं है, परन्तु वह आत्मा है, और उसकी उपासना हमें आत्मा और सच्चाई के साथ करनी चाहिए। यीशु ने सिखाया था, कि परमेश्वर हमारा स्वर्गिय पिता है, और हम चाहे कितने भी बुरे क्यों न हो, वह हम से प्रेम करता है। और अपने महान प्रेम को उसने इस बात से प्रकट किया है, कि जबकि हम सब पापी ही थे, उसने अपने एकलौते पुत्र को हम सब के पापों का प्रायश्चित करने को बलिदान कर दिया। और वह चाहता है कि हम सब उसके उस पुत्र में विश्वास लाएं। यह विश्वास लाएं, कि वह मेरे और सारे जगत के पापों को प्रायश्चित है।

यीशु ने सिखाया था, कि जगत में प्रत्येक मनुष्य पापी है, और पाप के कारण हर एक इन्सान परमेश्वर से अलग है। इसलिये हर एक मनुष्य की परम आवश्यकता यह है कि वह इस जीवन के रहते परमेश्वर के साथ अपना मेल कर लें। क्योंकि यदि मनुष्य इस जीवन के रहते परमेश्वर

के साथ अपना मेल स्थापित नहीं करेगा, तो वह हमेशा के लिये परमेश्वर से अलग होकर रहेगा–और जिस स्थान पर मनुष्य हमेशा के लिये परमेश्वर से अलग होकर रहेगा उस जगह को यीशु ने "नरक" कहकर सम्बोधित किया था। प्रभु यीशु ने कहा था, कि, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त कर ले, और अपना प्राण खो दे, या उस की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा ?" (लूका ६:२५)।

मनुष्य का प्राण उसकी आत्मा है, और मनुष्य उसे खो सकता है या उसकी हानि उठा सकता है। किन्तु परमेश्वर ऐसा कदापि नहीं चाहता। वह आपको और मुझे और हम सबको अपने स्वर्ग में हमेशा का जीवन देना चाहता है– और यही कारण है, कि उसने अपने एकलौते पुत्र को जगत के पापों का प्रायिश्यत करने को भेजा था। और मेरी आशा है कि आप अपने सारे मन से उसमे विश्वास लाएंगे।

क्या आप परमेश्वर में विश्वास करते हैं ?

आज मैं आपके साथ इस बात पर विचार करना चाहता हूँ, कि क्या आप परमेश्वर में विश्वास करते हैं ? और अगर आप उस में विश्वास करते हैं, तो आप का विश्वास किस प्रकार का है ? आप परमेश्वर के बारे में क्या सोचते हैं ? वह क्या है ? वह आप से क्या चाहता है ? क्या आप उसमें केवल विश्वास ही करते हैं, या क्या आप उसकी बातों पर भी चलते हैं ?

अधिकतर लोग परमेश्वर को केवल एक तस्वीर या एक आकृति के रूप में ही देखते हैं। उसके सामने आकर वे झुकते हैं, उसे माला पहनाते हैं, उसके आगे हाथ जोड़ते हैं और गिड़गिड़ाते हैं। कागज़, मिट्टी और लकड़ी की बनी उस आकृति को लोग ऊंचे स्थानों पर रखते हैं, उसका आदर और सम्मान करते हैं। फिर, अकसर लोग ऐसा सोचते हैं, कि परमेश्वर किसी एक खास जगह पर रहता है। सो उसके रहने के लिये वे कुछ विशेष भवन बनाते हैं, जैसे "गिरजा–घर", और उसके भीतर जाकर उन्हें ऐसा महसूस होता है, मानो उसके भीतर परमेश्वर रहता हैं। शताब्दियों से मनुष्यों ने परमेश्वर को अनेकों नाम और आकार दिये हैं। तरह–तरह की कल्पनाओं के द्वारा उसे गढ़ा और सजाया है। हजारों वर्ष पूर्व जब परमेश्वर इसराइलियों को प्राचीन मिस्र की गुलामी से स्वतंत्र कराकर बाहर ले आया था, तो बाइबल हमें बताती है, कि उन्होंने सोना ढालकर एक बछड़ा बनाया था। फिर वे उसके आगे नाचने और गाने लगे। उन्होंने

उसे पूजा, और उसकी आराधना की। और उनके बुजुर्गों ने उन से कहा, कि यही तुम्हारा वह परमेश्वर है, जो तुम्हें मिस्र से बाहर निकालकर लाया है। अर्थात् उन्होंने परमेश्वर को एक बछड़े के समान बना दिया था। हम कल्पना करके देखें, कि परमेश्वर को इस बात से कितना अधिक दुख हुआ होगा। जिस परमेश्वर ने ऐसे विशाल और सुंदर संसार को बनाया है जिस ने इंसान को और प्राकृति की, ऐसी–ऐसी सुंदर वस्तुओं को बनाया है। उसी महान परमेश्वर को उन इसराएलियों ने अपनी कल्पना से एक बछड़ा बना दिया था। मान लें, यदि आपकी तुलना कोई किसी पशु से करे तो आप को कैसा लगेगा ? यदि एक बछड़े या बकरे को आप का नाम देकर कोई कहे कि यह फ़लाना जा रहा है, तो आपको कैसा लगेगा ? पर ज़रा सोचकर देखें, कि शताब्दियों से मनुष्यों ने परमेश्वर को क्या–क्या नहीं बनाया है, और क्या–क्या नहीं पुकारा है।

लगभग दो हजार साल पहले जब पौलुस यूनान में परमेश्वर का सुसमाचार सुनाने को गया था, तो उस ने वहां पाया था कि वहां के लोग बड़े ही "ईश्वर–भक्त" थे। जगह–जगह पर तरह–तरह की मूर्ते रखी हुई थीं। किसी पर कुछ लिखा था, तो किसी पर कुछ। वास्तव में यूं लिख है, कि पौलुस ने सारे नगर को मूरतों से भरा पाया। तब पौलुस ने लोगों को इकट्टा किया, और उनके बीच में खड़े होकर उनसे उसने यूं कहा,

"हे अर्थने के लोगों में देखता हूँ, कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े मानने वाले हो। क्योंकि मैं फिरते हुए तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक ऐसी वेदी भी पाई, जिस पर लिखा था, कि "अनजाने ईश्वर के लिये।" सो जिसे तुम बिना जाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसी का समाचार सुनाता हूँ।" और फिर उसने उनसे कहा, कि

"जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया है, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता। और न किसी वस्तु को प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है। क्योंकि वह तो आप ही सब को जीवन और स्वास और सब कुछ देता है। और उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं ------सो परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं, कि ईश्वरत्व, सोने या रूपे या पत्थर के समान हैं, जो मनुष्यों की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हों।" (प्रेरितों १७:२२–२९)।

इस वर्णन में सबसे पहली बात हम यह देखते हैं, कि अर्थने के वे लोग बड़ी ही धार्मिक प्रवृति के थे। पूजा पाठ और आराधना करने वाले लोग थे वे। टी० वी० के आज के इस युग में ऐसे लोगों की बड़ी ही कमी होती जा रही है। क्योंकि परमेश्वर को याद करने का तो लोगों के पास आज समय ही नहीं है। परमेश्वर तो उन्हें केवल तभी याद आता है जब वे किसी भारी संकट में पड़ जाते हैं, या जब उनका सामना बीमारी या किसी दुर्घटना से होता है। पर अथेने के वे लोग हर बात में अपने देवताओं को याद किया करते थे। जबकि यह बात बड़ी ही प्रशंसनीय थी, किन्तु सच्चे तथा जीवते परमेश्वर से वे अनजान थे। इस विषय में वे अंधकार में थे। क्योंकि उन्होंने अनजानेपन में परमेश्वर को नाना–प्रकार के नाम दिये हुए थे, और उसके भिन्न–भिन्न आकार बनाए हुए थे। वे यह समझते तो थे, कि एक परमेश्वर है, उसके होने का ज्ञान उनके मनों में विद्यमान था। पर वे उसे जानते नहीं थे। और इसीलिये पौलुस ने उन से कहा, कि जिस परमेश्वर को तुम बिना जाने और पहिचाने पूजते हो उसी को समाचार आज मैं तुम्हें सुनाना चाहता हूँ। और उसने उन्हें बताया कि वह सच्चा परमेश्वर

आत्मा है, वह परम–आत्मा है। और इसलिये न तो उसका कोई आकार बनाया जा सकता है, और न ही उसे कल्पना करके किसी वस्तु में ढाला या गढ़ा जा सकता है। और उसने उन्हें यह भी बताया कि वह परमेश्वर, जिस ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की है, और जिसने इन्सान को और सारे संसार को बनाया है उस महान तथा सर्वशक्तिमान ईश्वर को हम किसी विशेष भवन या इमारता के भीतर बंद नहीं कर सकते। वह सच्चा और जिन्दा परमेश्वर किसी एक जगह पर नहीं रहता है। वह सर्व–व्यापि है। और यह सब कहने के बाद, पौलुस ने उन लोगों से कहा, कि, "इसलिये परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है।" (प्रेरितों १७ : ३०)।

और आज, जबकि हम एक आधुनिक युग में रहते हैं, विद्या और विज्ञान के समय में रहते हैं, आज भी इस पृथ्वी पर अनेकों लोग परमेश्वर को अनजाने में, काल्पनिक रीति–रिवाजों के अंधकार में चलकर मान रहे हैं। उसके लिये बेदियां बनाई जाती हैं, उसके आगे मोंम–बत्तियां और धूप जलाई जाती है। उसे हार पहनाए जाते हैं। फल–फूल और तरह–तरह के चढ़ावे उसके आगे चढ़ाए जाते हैं। परन्तु क्या परमेश्वर को इन सब वस्तुओं का प्रयोजन है ?

मित्तो, आज के इस पाठ से मैं आप को यही सिखाना चाहता हूँ, कि परमेश्वर न तो एक मनुष्य है, और न ही उसकी तुलना सृष्टि की किसी भी वस्तु से की जा सकती है। वह परम–आत्मा है। उसने सारे जगत को बनाया है। और उसी ने इन्सान को भी बनाया हैं। हम उसे जान सकते हैं, और यह भी जान सकते हैं, कि वह हमसे क्या चाहता है। क्योंकि उस ने अपने आप को और अपनी इच्छा को मनुष्यों पर प्रकट किया है। पर आज जबकि इन्सान नए–नए

अविष्कार कर रहा है, ज़मीन में से चीजों को खोद–खोद कर निकाल रहा है, और आकाश और समुद्र के भीतर घुस–घुसकर नई–नई जानकारियाँ प्राप्त कर रहा है, फिर भी परमेश्वर के बारे में वह आज भी उतना ही अनजान हैं जितना कि वह सदियों पहले था । करोड़ों लोग आज भी उन इसराएलियों की तरह नाना प्रकार की वस्तुओं के आगे झुककर दन्डवत कर रहें हैं जिन्होंने एक बछड़े को अपना परमेश्वर मान लिया था । और ऐसा इसलिये है, क्योंकि अधिकतर लोग परमेश्वर के बारे में और उस की इच्छा के बारे मे जानना नहीं चाहते । वे इस बात की आवश्यकता को ही महसूस नहीं करते । उनका विश्वास है, कि परमेश्वर है और उसे जैसे भी मान लो, वह सब कुछ स्वीकार कर लेता है । परन्तु मनुष्यों का ऐसा सोचना गलत है । क्योंकि सच्चाई यह है, कि हम सब का केवल एक ही परमेश्वर है, और उस परमेश्वर ने हम सब के लिये अपनी एक ही इच्छा को, एक ही समान प्रकट किया है । प्रभु यीशु ने कहा था, कि तुम सच्चाई को जानोगे और सच्चाई तुम्हें आजाद करेगी । (यूहन्ना ८:३२) । हमे सच्चाई को जानने की आवश्यकता है, क्योंकि केवल सच्चाई ही हमें अंधकार से छुटकारा दिला सकती है । और सच्चाई को जानने के लिये हमें यीशु के पास आने की आवश्यकता है । क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा था कि, मार्ग और सच्चाई और जीवन में ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता । (यूहन्ना १४:६) । क्या आप सच्चे और जिंदा परमेश्वर को जानना चाहते हैं ? क्या आप अपने लिये उसकी इच्छा को जानना चाहते हैं ? यदि हां । तो आपको यीशु के पास आने की आवश्यकता है । प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर का वह एकलौता पुत्र है जो जगत के पापों का प्रायश्चित करनें को आया था । वह परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में एक बिचवई है जिस के द्वारा हम परमेश्वर

को जानकर उसके पास आ सकते हैं। और मेरा विश्वास है, कि जबकि इस विषय में हम अपने अगले पाठ में और आगे देखेंगे, आप हमारा अगला कार्यक्रम सुनना नहीं भूलेंगे। तब तक के लिये मैं आप से आज्ञा चाहूंगा।

परमेश्वर कहां है ?

यह कार्यक्रम परमेश्वर के वचन की बातों को सुनने को कार्यक्रम है । प्रत्येक सप्ताह इस समय हम अपने ध्यानों को उन बातों को सुनने की ओर लगाते हैं जिन्हें परमेश्वर ने अपनी पुस्तक बाइबल के द्वारा सारे जगत के लोगों के लिये प्रकट किया है । किन्तु जब हम परमेश्वर के बारे में बोलते हैं तो कुछ लोग कहते हैं, कि परमेश्वर कौन है ? कहां है परमेश्वर ? वे कहते हैं, कि परमेश्वर नाम की कोई चीज़ नहीं है । क्योंकि यदि परमेश्वर है, तो वह अपने आप को प्रकट क्यों नहीं करता ? अगर परमेश्वर है, तो फिर संसार में बहुत से लोग गरीब क्यों हैं, क्यों इतनी सारी बीमारियां हैं, क्यों इतनी सारी दुर्घटनाएं होती हैं, क्यों जगत में इतना अन्याय है ? यदि परमेश्बर है, तो फिर बुरे काम करने वाले लोग क्यों उन्नति कर रहे हैं, जबकि अच्छाई पर चलने वाले लोग अकसर सताएं जाते हैं ? अर्थात् , क्योंकि बुराई पृथ्वी पर है इसलिये बहुतेरे लोग सोचते हैं कि परमेश्वर नहीं है, क्योंकि यदि परमेश्वर होता, वे कहते हैं, तो वह अवश्य ही बुरे लोगों को नाश करता या फिर बुराई को होने ही नहीं देता ।

बहुत से लोग परमेश्वर को एक जादूगर की तरह देखना चाहते हैं । जो बुराई करने वालों को तत्काल दन्ड दे दे, और अच्छे काम करने वालों को तत्काल आशीष दे दे । परन्तु यदि ऐसा वास्तव में होता, कि परमेश्वर बुरे काम करने वालों को उसी वक्त दन्ड दे देता और अच्छे काम करने वालों को उसी समय आशीष दे देता, तो फिर अपनी मर्जी से, परमेश्वर को आदर करने के लिये, आज कौन सा

इन्सान परमेश्वर की इच्छा पर चलाता ? यदि वास्तव में ऐसा होता, कि आज बुराई करने वालों को परमेश्वर तत्काल दन्ड देता होता तो फिर परमेश्वर और मनुष्य का सम्बन्ध ऐसा होता जैसा कि एक सर्कस में जानवरों का अपने मालिक के साथ होता है। मेरा विश्वास है, कि आप ने सर्कस में देखा होगा कि किस प्रकार मार के डर से शेर और हाथी इत्यादि अपना–अपना काम दिखाते हैं। यदि मार खाने का डर न हो तो वह कदापि नहीं करेंगे जो उन से करने को कहा जाता है।

परन्तु परमेश्वर हमसे ऐसा नहीं चाहता। वह ऐसा नहीं चाहता, कि हम किसी प्रकार के डर के मारे उसकी इच्छा पर चलें। परन्तु वह चाहता है कि हम उसकी बातों को इसलिये माने और इसलिये उसकी मर्जी पर चलें क्योंकि हम उस से प्रेम करते हैं, यह जानते हुए कि वह हमें जीवन देने वाला हमारा स्वर्गीय पिता है। वह हम से प्रेम करता है। वह हमें दन्ड नहीं देता। वह किसी को भी नरक में नहीं भेजता। मनुष्य बुराई पर चल–कर स्वयं अपने आपको नरक में ले जाता है। परमेश्वर किसी भी इन्सान का बुरा नहीं चाहता। वह लोगों को बीमार नहीं करता है। वह दुर्घटनाओं के लिये जिम्मेदार नहीं है। हां, उसने नियम अवश्य बनाएं हैं। और जब इन्सान उसके बनाए हुए नियमों का उल्लंघन करता है तो उसे उसका परिणाम भी भुगतना पड़ता है। अगर हम आग में हाथ डाल दें तो इसका मतलब यह नहीं हैं कि परमेश्वर हमारे हाथ को जलने से बचा दे। यदि समुद्र के किनारे चलते हुए हमारा पैर फिसल जाए और हम डूब जाएं, तो इसका मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर ने हमे डूबने से नहीं बचाया, और इसलिये परमेश्वर है ही नहीं। या मान लें, कुछ लोग बस में यात्रा कर रहे हैं, और उसमें अच्छे काम करने वाले लोग भी हैं और छोटे–छोटे मासूम

बच्चे भी हैं। लेकिन बस के ड्राइवर ने शराब पी रखी है। और इसलिये एक भयंकर दुर्घटना हो जाती है। और बस सफर करने वाले सारे लोग दुर्घटना में मर जाते हैं। अब क्या उस दुर्घटना के लिये परमेश्वर जिम्मेदार है ? या क्या यह कहना सही होगा, कि परमेश्वर है ही नहीं क्योंकि यदि वह हैं तो वह उस दुर्घटना को होने ही नहीं देता ?

हमें इस बात को समझना चाहिए, कि परमेश्वर ने जब इतने बड़े संसार को रचा है तो उस ने उसके लिये कुछ कायदे–कानून और नियम भी अवश्य ही बनाए हैं। और जब मनुष्य जाने या अनजाने में उन नियमों को उल्लंघन करता है तो उसे उसका नतीजा भी भुगतना पड़ता है। परमेश्वर ने लोगों को गरीब और अमीर नहीं बनाया है। उसने लोगों को बेरोज़गार और रोज़गार वाला नहीं बनाया हैं। परमेश्वर किसी के ऊंची जाति या किसी को छोटी जाति में पैदा नहीं करता। परमेश्वर के लिये सब लोग बराबर है। उसनें हम सब को एक जैसे शरीर दिए हैं। हम सब के खून का रंग लाल है। उसने हम सब को एक–एक सिर और एक–एक मुंह दिया है। जैसे आपके दो हाथ हैं वैसे ही मुझे भी उसने दिये हैं। दो कान, दो आंखे और दो पांव सब के हैं। यानि परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता है। उसनें सब को एक ही मूल से एक समान बनाया है। और वह हम सब से एक समान प्रेम करता है। पक्षपात मनुष्य करता है। जाति–पाति मनुष्य ने बनाई है। ऊंच–नीच मनुष्य करता है। भेद–भाव मनुष्य ने पैदा किए है। और इसी कारण मनुष्य दुख झेलता हैं। अर्थात सारे दुख–दर्द, जोखिश और समस्याएं जिनका सामना लोगों को करना पड़ता है– उस सबका ज़िम्मेदार स्वयं इन्सान है।

पर क्या परमेश्वर इन सब बातों को चुपचाप होते देख रहा है ? क्या उसे लोगों की चिन्ता नहीं है ? क्या वह

हमारे दुखों से हमें छुटकारा नहीं दिला सकता ? अगर परमेश्वर है तो वह कहां है ?

प्रभु यीशु मसीह जब इस पृथ्वी पर था, तो वह जगह–जगह घूम–घूमकर परमेश्वर के वचन का प्रचार किया करता था। वह लोगों को बताता था, कि परमेश्वर हमारा स्वर्गीय पिता है। वह हम से प्रेम करता है। और मनुष्य पाप के कारण परमेश्वर से अलग है। वह उन्हें सिखाता था, कि वे पाप से अपना मन फिराकर और परमेश्वर की इच्छा पर चलकर परमेश्वर के साथ अपना मेल कर लें, ताकि जब वे इस संसार को छोड़कर जाएं तो वे परमेश्वर के पास जाकर उसके साथ हमेशा रहें। यीशु परमेश्वर का पुत्र था। वह स्वर्ग से पृथ्वी पर अपने प्राणों को देकर मनुष्य के पापों का प्रायश्चित करने को आया था। और इसलिये, लोगों को यह विश्वास दिलाने के लिये कि वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है, यीशु ने लोगों के सामने बड़े–बड़े अद्भुत और सामर्थ के काम किए थे। एक बार हजारों लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ यीशु के पीछे हो ली थी क्योंकि जो आश्चर्यकर्म वह बीमारों पर दिखाता था उन्हें देख देखकर वे बड़े ही अचम्भित होते थे। वह भीड़ कई घन्टों से यीशु के पीछे थी और जहां वह जाता था लोगों की वह भीड़ उसके पीछे हो लेती थी। यीशु को उन पर तरक आया और उसने अपने चेलों से कहा कि इन सब को घास पर बैठा दो क्योंकि हम इन्हें खाना खिलाएंगे। चेले यह सुनकर बड़े ही हैरान हुए, क्योंकि लोगों की संख्या हजारों की थी, और इतना भोजन कहां से आएगा ? फिर भी, चेलों ने सब लोगों को बैठा दिया। उसी भीड़ में एक लड़का था जिसके पास अपने खाने के लिये थोड़ा सा भोजन था। यीशु ने वह भोजन उस से ले लिया और उसके लिये परमेश्वर को धन्यवाद दिया। और फ़िर अपने चेलों को उस को देकर

कहा कि इसे सब लोगों में बोट दो। आश्चर्य से परिपूर्ण चेले उस भोजन को बांटने लगे और लोगों नें खाना आरम्भ कर दिया। जब सब लोग खा चुके तो बारह टोकरे जूठन के वहां से बटोरे गए। ये सब देखकर लोगों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा और वे सब यीशु की जय बोलने लगे। लेकिन यीशु अपनी महिमा नहीं करवाना चाहता था। सो वह वहां से निकलकर चला गया। परन्तु जब दूसरा दिन हुआ, तो वह भीड़ फिर यीशु को ढूंढने लगी। और जब वह उन्हें मिल गया तो उन्होंने बड़े ही हर्ष के साथ कहा कि तू कहां गायब हो गया था हम तो तुझे कब से ढूंढ रहे हैं ? परन्तु यीशु तो उनके मन की बात जानता था। सो यीशु ने उन से कहा, कि मैं जानता हूँ कि तुम मुझे किस लिये ढूंढ रहे हो, तुम मुझे इसलिये नहीं ढूंढ रहे हो कि तुम ने मेरे सामर्थ के कामों को देखकर यह मान लिया है कि मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ, परन्तु तुम मुझे इसलिये ढूंढ रहे हो क्योंकि कल तुम ने पेट भरकर रोटियां खा ली थीं। और फिर यीशु ने उन्हें उपदेश देकर कहा, कि नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करों, परन्तु उस भोजन के लिये करो जो अनन्त जीवन के लिये ठहरता है।

सो यहां से हम क्या सीखते हैं ? हम यह सीखते हैं कि वे लोग यीशु को इसलिये ढूंढ रहे थे क्योंकि उन्हें मालूम था कि यीशु उन्हें रोटियां खिला सकता है। अब मान लें यदि आज परमेश्वर आश्चर्य कर्मो के द्वारा बीमारों को चंगा कर दे, लोगों के सब प्रकार के दुख–दर्दो से उन्हें छुटकारा दिला दे, और खाना और कपड़ा और मकान पैसा दे दे। तो कितने लोग आज परमेश्वर के पीछे चलने लगगें ? यदि ऐसा वास्वत में हो जाए तो मैं जानता हूँ कि जितने भी लोग आज मेरे इस रेडियो कार्यक्रम को सुन रहे हैं वे सब के सब परमेश्वर का नाम लेने लगेंगे। पर किस लिये ?

क्योंकि परमेश्वर उनके शारीरिक कष्टों को दूर कर रह है। अब यदि परमेश्वर ऐसा करना चाहे तो वह ऐसा कर सकता है। परन्तु वह ऐसा नहीं चाहता। वह नहीं चाहता, कि लोग उसकी स्तुति, प्रशंसा और बड़ाई किसी लालच से करें या इसलिये उसकी बातों को मानकर उसकी इच्छा पर चलें क्योंकि वह उनके कष्टों को दूर कर रहा है। पर जिस प्रकार यीशु ने उस भीड़ के लोगों से कहा था, कि नाशमान भोजन कि लिये परिश्रम न करो पर उस भोजन के लिये करो जो अनन्त जीवन तक ठहरता है। ऐसे ही आज भी परमेश्वर यही चाहता है, कि हम अपने शरीर से अधिक अपनी आत्मा की चिन्ता करें। शारीरिक वस्तुओं से अधिक आत्मिक वस्तुओं की खोज करें। शरीर को बचाने से अधिक अपनी आत्मा को बचाने की ओर ध्यान दें। क्योंकि शरीर तो नाशमान है परन्तु मनुष्य की आत्मा अमर है। परमेश्वर ने हमारी आत्माओं को बचाने कि लिये अपने एकलौते पुत्र यीशु को बलिदान कर दिया, ताकि वह हमारे पापों का प्रायश्चित बन जाए। और उसमें विश्वास लाकर और उसकी आज्ञाओं को मानकर हम परमेश्वर के स्वर्ग में जाने के योग्य बन जाएं। परमेश्वर को आपकी चिन्ता है। उसे सारे जगत की चिन्ता है। क्योंकि वह तो हम सब का स्वर्गीय पिता है। क्या आप उस से प्रेम करते हैं ? क्या आप उसका आदर और सम्मान करते हैं ? क्या उसका स्थान आप के जीवन में सब से बड़ा है ? परमेश्वर आपके के जीवन में कहां है ?

परमेश्वर आप से क्या चाहता है ?

एक बार फिर से हमें यह सुंदर अवसर मिल है कि हम अपने ध्यानों को उन बातों की ओर लगाएं जिनका महत्व बहुत ही बड़ा है, और जिनका सम्बन्ध हमारी आत्माओं से हैं। यह जीवन हमें परमेश्वर से मिला है। और समय हमारे जीवनों में एक बहुत बड़ी आशीष है। समय या वक्त एक ऐसी वस्तु हैं जिसे हम वापस कभी नहीं बुला सकते। यदि हमारी सेहत खराब हो जाए तो हम उसे फिर से प्राप्त कर सकते हैं। अगर हमारी कोई वस्तु खो जाए तो उसे या उसके स्थान पर हम दूसरी हासिल कर सकते हैं। पर बीता हुआ समय हम वापस प्राप्त नहीं कर सकते। समय एक बड़ा ही अनमोल खजाना है। प्रत्येक वर्ष जब एक नया साल आरम्भ होता है तो लोग खुशियां मनाते हैं। एक–दूसरे को मुबारकबाद देते हैं। लेकिन कुछ ही समय में वह नया वर्ष हमारे हाथ से निकल जाता है। समय हमें परमेश्वर की ओर से मिलता है। और किसी के भी जीवन में उसका अन्त कभी भी हो सकता है। इसलिये मैंने कहा है , कि समय एक बहुमूल्य वस्तु है। प्रत्येक वर्ष में हमें तीन–सौ–पैंसठ दिन मिलते हैं। और हर एक साल में बारह महीने और बावन हफ्ते होते हैं। और जब कि एक दिन में हमारे पास चौबीस घंटे होते हैं, पूरे वर्ष में हमें आठ–हजार–सात–सौ–साठ घंटे मिलते हैं। और यदि इन घंटों को मिनटों में परिवर्तित किया जाए जो हम देखते हैं, कि जबकि प्रत्येक दिन में हमारे पास एक–हज़ार–चार–सौ–चालिस मिनट होते हैं, पूरे

वर्ष में हमारे पास पांच–लाख–पच्चीस हजार–छ–सौ मिनट होते हैं। और ऐसे ही, जबकि हर एक दिन में हमे छियासी–हज़ार–चार–सौ–सैकेंड मिलते हैं, तो पूरे वर्ष में हमारे पास तीन–करोड़–पन्द्रह–लाख–छत्तीस–हजार सैकेंड होते हैं। अब यदि इस सारे समय को आप अपनी उम्र के वर्षो से गुणा करके देखें तो आप यह देखकर हैरान रह जाएंगे कि इस पृथ्वी पर आप इतने ढेर घंटे और मिनट और सैकेंड व्यतीत कर चुके हैं जिनका कि हिसाब लगाना भी आप को कठिन हो जाएगा। पर विचार करके देखने वाली बात यह है, कि अपने अब तक के जीवन में जितना भी समय परमेश्वर ने आप को दिया है उसका आपने क्या किया है ? क्या उस समय का आप ने सद्उपयोग किया था या उसे यों ही खो दिया है ?

समय आपके जीवन में एक सबसे बड़ी महत्वपूर्ण वस्तु है। पर जो समय बीत चुका है उसे हम फिर कुछ भी करके वापस नहीं बुला सकते। और जो समय हम वर्तमान में व्यतीत कर रहे हैं वह एक–एक क्षण बड़ा ही मूल्यवान है। पर हम में से अधिकतर लोग इस बात की और ध्यान नहीं देते। हम ऐसे रहते और व्यक्त करते हैं जैसे कि हम सदा इस पृथ्वी पर रहेंगे और समय हमारे साथ यों ही चलता रहेगा। पवित्र बाइबल का लेखक इस गम्भीर बात की ओर हमारा ध्यान दिलाकर कहता है, कि "तुम ज़ो यह कहते हो कि आज या कल हम किसी और नगर में जाकर वहां एक वर्ष बिताएंगे, और व्यापार करके लाभ उठाएगे, और यह नहीं जानते कि कल क्या होगा, पर तुम्हारा जीवन है ही क्या ? तुम तो मानो भाप समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती है और फिर लोप हो जाती है। इस के विपरीत, इसलिये, तुम्हें यह कहना चाहिए, कि यदि प्रभु चाहे तो हम जीवित रहेगे, और यह या वह काम करेंगे।" याकूब ४:१३–१५)।

समय बिना किसी अवरोध के यों ही चलता रहता है, बहता रहता है। उसे हममें से कोई नहीं रोक सकता। हमारे जीवन की घड़ी की टिक–टिक कभी भी बन्द हो सकती है। पर समय की घड़ी सदा यों ही चलती रहेगी।

प्रभु यीशु मसीह से लगभग पन्द्रह सौ वर्ष पूर्व मूसा ने बाइबल में लिखकर एक जगह यूं कहा था, कि, "हमारी आयु के वर्ष सत्तर तो होते हैं, और चाहे बल के कारण अस्सी वर्ष भी हो जाएं, तौभी उनका घमन्ड केवल कष्ट और शोक ही शोक है, क्योंकि वह जल्द कट जाती है, और हम जाते रहते हैं। इसलिये, हे परमेश्वर, "हम को अपने दिन गिनने की समझ दे, कि हम बुद्धिमान हो जाएं।" (भजन संहिता १०:१०,१२)। और फिर बाइबल के नए नियम का लेखक यों कहता है, कि, "इसलिये ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो, निर्बुद्धियों की नाई नहीं पर बुद्धिमानों की नाई चलों। और अवसर को बहुमूल्य समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं। इस कारण निर्बुद्धि न हो, पर ध्यान से समझो, कि प्रभु की इच्छा क्या है ?" (इफिसियों ५ : १५–१७)। यहां हमारा ध्यान चार विशष बातों की ओर दिलाया गया है। सबसे पहले तो यह, कि हम अपने–अपने चाल–चलन पर ध्यान दें कि हम कैसी चाल चलतें हैं ? हमारे काम और हमारी बोल–चाल कैसी है ? क्या हमारे कामों से, हमारे रहन–सहन से, हमारी बोल–चाल से और हमारे जीवनों से उस परमेश्वर की प्रशंसा होती है जिसने हमे यह जीवन और समय दिया है ? जब लोग हमारे कामों को देखते हैं और हमारी बोली को सुनते हैं तो क्या इससे यह प्रकट होता है कि परमेश्वर हमारा स्वर्गीय पिता है और हम उसकी संतान हैं ? परमेश्वर ने हमें यह जीवन इसलिये नहीं दिया है, कि हम गाली–गलौच करें और अपने मुंह से गन्दी बातें बोलें और लड़ाई–झगड़ा करें और बुरे और गन्दे काम करें। सो

हमें चाहिए कि हम अपने–अपने चाल–चलन का निरीक्षण करें और देखें कि हमारा चाल–चलन परमेश्वर की दृष्टि में और लोगों के सामने कैसा है ?

दूसरी बात जिस पर हमारा ध्यान दिलाया गया है, वह यह है, कि हम अवसर को बहुमूल्य समझें। जो अवसर आज आप के पास है वह कल आप को नहीं मिलेगा। क्योंकि कल के बारे में तो हम जानते ही नहीं। इसलिये, आज जो समय आप के पास है, जो अवसर इस समय आपके पास है उसे बहुमूल्य समझकर उसका लाभ उठाएं। जिन बातों को आप इस समय सुन रहे हैं, वे आप के सम्पूर्ण जीवन को बदल सकती हैं। क्योंकि यदि आप इस समय कहीं और होते या किसी और काम में व्यस्त होते तो यह अवसर आप को न मिलता सो यह अवसर आप के लिये बहुमोल है। और ऐसे ही, प्रत्येक अवसर जो हमें परमेश्वर की ओर से मिलता है वह बहुमोल होता है और हमे उसका भर पूर लाभ उठाना चाहिए। क्यों ? क्योंकि, आगे बाइबल का लेखक कहता है कि, "दिन बुरे हैं।" और दिन वास्तव में बुरे हैं। पहले बुराई को देखने हमें अपने घरों से बाहर जाना पड़ता था। लेकिन अब हम लगभग सभी बुराईयों को स्वयं अपने घरों में ही देख लेते हैं। क्या नहीं दिखाया जाता और कहा जाता है हमारे टेलेविजन पर ? और जो कमी रह जाती है उसे सड़कों और दुकानों पर मिलने वाला आज का साहित्य पूरा कर देता है। आज़ादी और कला के नाम पर आज सब कुछ खुले–आम कहा और दिखाया जा रहा है। दिन वास्तव में बुरे हैं। लोगों के चरित्र बिगड़ रहे हैं। लोग अपने उन सुंदर शरीरों को नाश कर रहे है जिन्हें उन्हें परमेश्वर ने दिया है। और इस से भी अधिक दुख की बात यह है, कि लोग अपनी उस आत्मा का विनाश कर रहे हैं जो परमेश्वर का प्रतिरूप है और जो अमर और अनन्त है।

क्योंकि पाप न केवल शरीर को नाश करता है पर आत्म को भी नाश करता है। और पाप के ही कारण कोई भी मनुष्य परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर पाएगा। और इसलिये हमें इस बात को समझना चाहिये कि यदि हम पाप के कारण परमेश्वर पास नहीं जा सकते तो हम अवश्य ही उस से दूर रहेंगे, उस स्थान में जिसे परमेश्वर की बाईबल में नरक कहकर सम्बोधित किया गया है। इसीलिये, बाइबल का लेखक एक चौथी बात पर हमारा ध्यान दिलाकर इस प्रकार कहता है, कि, "ध्यान से समझो, कि प्रभु की इच्छा क्या है ?"

क्या कभी आपने इस बात पर विचार किया है ? क्या कभी आप ने इस बात पर ध्यान दिया है, कि परमेश्वर कि इच्छा आप के लिये क्या है ? क्या कभी आप ने इस बात पर सोचा हैं, कि परमेश्वर आप से क्या चाहता है ? क्या कभी आपने इस बात पर विचार किया है, कि जिस समय आपका जीवन इस पृथ्वी पर समाप्त हो जाएगा और आप अपने नाशमान शरीर से अलग होकर यहां से जाएंगे, तब आप उस समय कहां जाएंगे ? इस बारे मे परमेश्वर की इच्छा क्या है ? परमेश्वर आप से क्या चाहता है ?

प्रभु यीशु मसीह ने कहा था, कि परमेश्वर ने सारे जग से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपने एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए। (यूहन्ना ३:१६)।

परमेश्वर आप को स्वर्ग में अनन्त जीवन देना चाहता है। वह जानता है कि आप ने बहुत से पाप किए हैं। और वह यह भी जानता है कि पाप के कारण कोई भी इन्सान उसके पास उसके स्वर्ग में नहीं आ सकता। इसलिये उसने हम सब कि लिये अपने एकलौते पुत्र को दे दिया परमेश्वर की इच्छा से और उसकी मनसा से और उसकी पहले से

ठहराई योजना से यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाकर मृत्यु दन्ड दिया गया था। प्रभु यीशु की मौत आप के लिये थी और मेरे लिये थी और सारे जगत के लिये थी। क्योंकि पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य ने पाप किया है। किन्तु परमेश्वर की इच्छा यह है कि सारा जगत उद्धार पाए। उसकी इच्छा यह है, कि आप उसके पुत्र यीशु मसीह में अपने सारे मन से विश्वास लाएं। और अपने प्रत्येक बुरे काम और चाल–चलन से अपना मन फेरकर अपने–अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लें। और उसकी उस इच्छा पर चलकर जिसे उसने अपनी पुस्तक बाइबल के द्वारा सब मनुष्यों पर प्रकट किया है इस पृथ्वी पर अपना जीवन व्यतीत करें। क्या इन बातों के संम्बन्ध में आप और अधिक जानना चाहते हैं ? क्या इन बातों के बारे में मैं आपकी कोई सहायता कर सकता हूँ ? आपके पत्र का मुझे इन्तिज़ार रहेगा।

आपके जीवन में परमेश्वर का स्थान कहां है ?

जब हम बाइबल को पढ़ते हैं तो उसमें हम प्रभु यीशु मसीह के बारे में पढ़तें हैं, क्योंकि बाइबल हमें यीशु मसीह के बारे में बताती है। यीशु के जीवन से एक सबसे बड़ी बात हमें यह सीखने को मिलती है, कि यीशु अपने जीवन में सबसे पहला और प्रमुख स्थान परमेश्वर को देता था। बाइबल में लिखा है, कि वैसा ही स्वभाव रखो जैसा यीशु मसीहा था (फिलिप्पियों २:५)। सो यदि हम प्रभु यीशु मसीह का सा स्वभाव रखना चाहते हैं, और यदि हम उसका सा जीवन व्यतीत करके उसके समान बनना चाहते हैं, तो हमे चाहिए कि हम भी यीशु की ही तरह अपने जीवनों में सबसे पहला और प्रमुख स्थान अपने स्वर्गीय पिता को दें।

प्रभु यीशु के बारे मे बाइबल में लिखा है, कि जब उसने परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार करना आरम्भ किया था, तो सबसे पहले वह यूहन्ना नाम के एक व्यक्ति के पास आया था और यीशु ने यूहन्ना से कहा था कि तू मुझे बपतिस्मा दे। यहुन्ना उस समय परमेश्वर की आज्ञानुसार लोगों को उनके पापों की क्षमा के लिये मनफिराव का बपतिस्मा देता था। पर यीशु की बात सुनकर यूहन्ना आश्चर्यचकित रह गया। क्योंकि वह जानता था, कि यीशु तो परमेश्वर का एकलौता पुत्र था और उसमें तो कोई भी पाप विद्यमान नहीं था। इसलिये यूहन्ना ने यीशु से कहा कि, "मुझे तो तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है और तू मेरे पास आया है ?" पर यीशु ने तुरन्त यूहन्ना से

कहा कि, "अब तो ऐसा होने ही दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है।" और आगे लिखा है, कि जब यीशु बपतिस्मा लेकर पानी में से ऊपर आया तो आकाश खुल गया और परमेश्वर की यह आकाशवाणी सुनाई दी, "कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।" (मत्ती ३:१३–१७)। यीशु स्वर्ग से आया था, वह परमेश्वर का पुत्र था, उसमें कोई भी पाप नहीं था, किन्तु फिर भी उसने हमारे सामने यह आदर्श रखा था कि परमेश्वर की इच्छा और आज्ञा का स्थान हमारे जीवनों में सर्वप्रथम होना चाहिए। क्योंकि यह जीवन हमें परमेश्वर से मिला है।

परमेश्वर के कामों को अपने जीवन में पहला स्थान देना यीशु का भोजन था। जैसे कि एक जगह बाइबल में हम पढ़ते हैं, कि एक बार यीशु थका –हारा और भूखा–पियासा एक कूएं के पास आकर बैठ गया और उसके चेले नगर से भोजन लेने को गए हुए थे। पर जब वे भोजन लेकर वापस आएं तो उन्होंने यीशु को लोगों से घिरा हुआ पाया, और यीशु उन्हें परमेश्वर के वचन की बातें बता रहा था। सो चेलों ने यीशु से कहा कि वह भोजन कर ले। पर यीशु ने उन से कहा कि "मेरा भोजन यह है, कि अपने भेजने वाले की इच्छा के अनुसार चलूं और उसका काम पूरा करूं।" (यूहन्ना ४:३४)। यीशु ने अपने अनुयायीयों से कहा था, कि सबसे पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसकी बातों की खोज करो, तब अन्य वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी। (मत्ती ६ : ३३)।

जिस समय यीशु पृथ्वी पर रहकर लोगों को परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाता था, उस समय फरीसी लोगों की धार्मिक रूप से अगुवाई करते थे। किन्तु जैसी शिक्षाएं फरीसी लोगों को देते थे, यीशु की शिक्षाएं उनकी शिक्षाओं के बिल्कुल विपरीत थीं। सो फरीसी यीशु के कट्टर विरोधी

बन गए थे। और वास्तव में फरीसियों ने ही यीशु को क्रूस पर चढ़ाकर मरवाने का षडयन्त्र भी रचा था। फरीसी बार–बार यह कोशिश करते थे कि किसी तरह से या तो वे यीशु की शिक्षा को गलत साबित कर दें या फिर उसके सामने कोई ऐसा प्रश्न रख दें जिसका उत्तर यीशु न दे सके। सो एक जगह बाइबल में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, कि "तब फरीसियों ने जाकर आपस में विचार किया, कि उसको किस प्रकार बातों में फंसाएं। सो उन्होंने अपने चेलों को यीशु के पास यह कहने को भेजा कि हे गुरू, हम जानते हैं, कि तू सच्चा है, और परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से सिखाता है: और किसी की परवाह नहीं करता, क्योंकि तू मनुष्यों को मुंह देखकर बातें नहीं करता। इसलिये हमे यह बता कि तू क्या समझता है ? क्या कैसर (अर्थात राजा) को कर देना उचित है या नहीं ? पर यीशु ने उनकी दुष्टता जानकर कहा, हे कपटियो, मुझे क्यों परखते हो ? कर का सिक्का मुझे दिखाओ तब वे उसके पास एक दीनार ले आए। तब यीशु ने उन से पूछा, कि सिक्के पर बनी मूर्ती और नाम किसका है ? उन्होंने कहा, कि वह कैसर का है, तब यीशु ने उन से कहा, कि जो कैसर का है, वह कैसर को दो,और जो परमेश्वर को है वह परमेश्वर को दो।" (मत्ती २२:१५–२१)।

परमेश्वर से हमे यह जीवन मिला है। और प्रत्येक वस्तु जो हमारे जीवन के लिये आवश्यक है उसका बनाने वाला और देने वाला भी परमेश्वर ही है। परन्तु हमारे जीवनों में आज परमेश्वर का स्थान कहां है ? क्या हम उसे याद रखते हैं ? क्या हमारे जीवनों से उसकी बड़ाई होती है ? अधिकांश लोगों के जीवनों में तो परमेश्वर का कोई स्थान है ही नहीं, और यदि है भी, तो वह सबसे नीचे या सबसे अंत में है। बहुतेरे लोग परमेश्वर को केवल तभी याद करते हैं जब उनके ऊपर कोई विपत्ति आती है। उनके लिये परमेश्वर

एक ऐसे जादूगर के समान है, जिसे यदि संकट के समय याद कर लिया जाए तो वह उन्हें संकट से बाहर निकाल लेगा। परमेश्वर उनके लिये एक ऐसी वस्तु है जिसे केवल आवश्यकता के समय ही याद करना उचित है। किन्तु बाइबल में हमारे लिये यह लिखा है, कि, "परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं को पालन कर, क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यही है। क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों को चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा।" (सभोपदेशक १२:१३,१४)

सो हम चाहे अपने जीवनों में परमेश्वर को कोई स्थान दें या न दें चाहे हम उस में विश्वास करें या न करें, पर एक बात निश्चित है, जिसे परमेश्वर ने हम सब को अपनी बाइबल में स्पष्ट रूप से बता दिया है, अर्थात यह, कि एक दिन हम सब का न्याय होगा। हम सब अपने सृष्टिकर्त्ता, अपने बनाने वाले और जीवन देने वाले परमेश्वर के सामने अपने–अपने भले और बुरे कामों को लेखा देगे। किन्तु, परमेश्वर हम से क्या चाहता है ? जैसे कि अभी हम ने देखा है, परमेश्वर चाहता है, कि हम उसका भय माने। अब इसका अर्थ यह नहीं है कि हम परमेश्वर से ऐसे डरें जैसे कि वह एक बड़ी भयानक चीज है, या वह कोई ऐसी बड़ी शक्ति है जो हमें नाश कर देगी। किन्तु, परमेश्वर का भय मानने का अर्थ है, कि हम उसका आदर करें। इसलिये, क्योंकि वह हमारा अध्यात्मिक पिता है, वह हमारा सृष्टिकर्त्ता है। उसने हमें यह जीवन दिया है, और उसे हमारी चिन्ता है, वह हम सब से प्रेम करता है। और अपने उस महान् प्रेम को, जो परमेश्वर हम सब से रखता है, उसने यीशु मसीह को संसार में भेजकर प्रकट किया है। हमारा परमेश्वर प्रेम है। वह नहीं चाहता कि हम में से कोई भी अपने पाप के कारण नाश हो। परन्तु वह यह चाहता है, कि हम सब

अपने पापों से उद्धार पा लें, और उसके स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य बन जाएं। परमेश्वर किसी का नाश नहीं चाहता। और, न ही वह किसी को नाश करेगा। प्रत्येक मनुष्य स्वयं अपने ही पापों के कारण उससे दूर है, और प्रत्येक मनुष्य स्वयं अपने ही पापों के कारण नरक में प्रवेश करेगा। किन्तु परमेश्वर ऐसा नहीं चाहता। उसने हमें यह जीवन दिया है, और उस ने हमें एक स्वतंत्र इच्छा दी है, ताकि हम सब अपनी–अपनी इच्छा से उसका आदर करें, उससे प्रेम रखें, और उसका भय मानें। और, यदि हम वास्तव में परमेश्वर का भय मानेंगे, तो अवश्य ही हम उसकी आज्ञाओं का भी पालन करेंगे, और वैसा ही जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न भी करेंगे जैसा कि वह चाहता है। इसी बात को हम प्रभु यीशु मसीह के जीवन से सीखते हैं। उसने हमेशा परमेश्वर को और उसकी इच्छा को अपने जीवन में प्रमुख स्थान दिया था। इसीलिये अपने पाठ के आरम्भ में हम ने देखा था, कि यद्यपि उसमें कोई पाप नहीं था, वह पवित्र और धर्मी था किन्तु, फिर भी उसने यह कहकर यूहन्ना से बपतिस्मा लिया था कि हम सब को इसी प्रकार परमेश्वर की आज्ञाओं को पालन करना आवश्यक है।

आज परमेश्वर हम सबसे यह चाहता है, कि हम सब उसका भय मानें, अर्थात उसका आदर करें। अपने जीवनों में उसे प्रमुख स्थान दें। प्रत्येक कार्य को करने से पहले इस बात पर ध्यान दें कि क्या उस काम को करने से परमेश्वर की प्रशंसा होगी ? यदि हम वास्तव में परमेश्वर का भय मानेंगे तो हम कोई भी ऐसा काम नहीं करेंगे जो उसकी इच्छा के विरूद्ध होगा। परन्तु हर एक काम में और बोल–चाल में हम इस बात का ध्यान रखेंगे कि परमेश्वर की इच्छा का स्थान हमारे जीवनों में सबसे पहला हो।

क्या आपके जीवन में परमेश्वर का कोई स्थान है ?

कहां है वह आप के जीवन में ? क्या वह आप के जीवन में पहला है या अंतिम है ? क्या आपने उसकी आज्ञाओं को मानकर अपने पापों से मुक्ति पा ली है ? क्या आप का जीवन प्रति दिन उसक इच्छा के अनुसार व्यतीत हो रहा है ? परमेश्वर ने मनुष्य के लिये अपनी सम्पूर्ण इच्छा को अपनी पुस्तक बाइबल में प्रकट किया है। क्या आप बाइबल में लिखी बातों को जानना चाहते हैं ? हमारा पता अभी आपको बताया जाएगा। यदि आप हमे लिखेंगे, तो हम आपको बाइबल के पाठ भेज देंगे।

हम क्या कह रहे हैं ?

जिन बातों को हम इस कार्य क्रम में आप को बताते हैं, वे बातें बिल्कुल अलग हैं। क्योंकि हम आप का ध्यान सांसारिक बातों की ओर नहीं दिलाते हैं, पर हम आप को वे बातें बताते हैं जो आत्मिक और स्वर्गीय हैं। क्योंकि हमारा विश्वास है कि संसार और जो कुछ भी जगत में है, वह सब नाशमान है। पर जो वस्तुएं स्वर्गीय और आत्मिक हैं वे सब अनन्त हैं, यानि उनका कभी अन्त नहीं होगा।

सो हम आप को परमेश्वर के बारे में बताते हैं। वह परमेश्वर जो आत्मा है, और जिसने सारे जगत की सृष्टि की है। क्योंकि हम जानते हैं, कि कोई भी वस्तु अपने आप विद्यमान नहीं हो सकती। प्रत्येक वस्तु का कोई न कोई बनाने वाला है। और यह सृष्टि जो ऐसी विशाल और अद्भुत है, स्वयं अपने आप विद्यमान नहीं हो सकती। आकाश और पृथ्वी और जो कुछ भी आकाश और पृथ्वी पर है, वे सारी की सारी वस्तुएं हमारा ध्यान इस बात पर दिलाती हैं। जिसने इन सब चीजों को बनाया है, वही परमेश्वर है।

फिर हम आप को ध्यान बाइबल की तरफ दिलाते हैं, और हम आप को बताते हैं कि बाइबल परमेश्वर का वचन है, अर्थात बाइबल में ऐसी बातें लिखी हुई हैं जिन्हें परमेश्वर ने हमें बताया है। बाइबल परमेश्वर के वचन और उसकी इच्छा की पुस्तक है। बाइबल में लिखी बातों के द्वारा परमेश्वर मनुष्य से बोलता है। बाइबल को मनुष्यों ने लिखा था, पर उसे परमेश्वर ने लिखवाया था। परमेश्बर ने उन लोगों को लिखने के लिये प्रेरणा दी थी। इसलिये जो कुछ भी उन लोगों ने बाइबल की पुस्तकों में लिखा था वह सब

परमेश्वर का वचन था। बाइबल को पढ़कर हम यह सीखते हैं, कि परमेश्वर वास्तव में कौन है, उसकी क्या विशषताएं है और उसका स्वाभाव क्या है। बाइबल हमें बताती है, कि परमेश्वर ने सारे जगत की और मनुष्य की सृष्टि किस प्रकार की थी। बाइबल को पढ़कर हमें यह जानकारी मिलती है, कि पाप जगत में किस प्रकार आया था, और पाप के कारण मनुष्य की क्या दशा हुई थी। बाइबल में परमेश्वर ने उन नियमों तथा सिद्धांतों को लिखवाया था जिनके अनुसार सब मनुष्यों को चलना चाहिए। किन्तु कोई भी मनुष्य पूरी तरह से परमेश्वर की इच्छानुसार नहीं चलता। और इसी बात को बाइबल में पाप कहा गया है। पाप का अर्थ है, उन नियमों तथा सिद्धांतों का उल्लंघन करना जिन्हें परमश्वर ने सब लोगों के लिये ठहराया है। और क्योंकि कोई भी इन्सान परमेश्वर द्वारा ठहराए नियमों और सिद्धांतों के अनुसार नहीं चलाता, इसलिये प्रत्येक मनुष्य पापी है और सब के सब परमेश्वर के पवित्रता के स्तर से गिर गए हैं। (रोमियों ३:२३)। मनुष्य के पाप और अधर्म ने उसे परमेश्वर से दूर और अलग कर दिया है।

पर मनुष्य एक आत्मिक प्राणी है। और हम आप का ध्यान इस महत्वपूर्ण बात पर दिलाते हैं, कि आप इस बात पर ध्यान दें कि आप शारीरिक और आत्मिक दोनों हैं। आप के पास एक शारीरिक देह है और आप के पास एक आत्मिक देह भी है। आप के पास दो व्यक्तित्व हैं, जिनमें से एक शारीरिक है, और एक आत्मिक है। और बाइबल कहती है, कि जबकि हमारा शारीरिक व्यक्तित्व तो नाशमान है, पर हमारा आत्मिक व्यक्तित्व अविनाश और अमर है। इसका अर्थ यह है कि जब मनुष्य की मृत्यु हो जाती है, तो उसका शरीर तो मिट्टी में मिलकर नाश हो जाता है पर उसकी आत्मा शरीर से मुक्त होकर हमेशा के लिये इस नाशमान

जगत से चली जाती है।

किन्तु मनुष्य मरता क्यों है ? कई बार लोग इस सवाल को उठाते हैं। क्या वह इसलिये मरता है कि वह फिर से किसी और देह के साथ या किसी और देह में होकर पृथ्वी पर जन्म ले ? बाइबल कहती है, कि प्रत्येक मनुष्य केवल एक बार मरता है। (इब्रानियों ९:२७) यानि इन्सान बार–बार जन्म लेकर जगत में नहीं आता है। पर हर एक मनुष्य केवल एक बार जन्म लेता है और केवल एक बार मरता है। पर मनुष्य मरता क्यों हैं ? और मरने के बाद उसकी आत्मा कहां जाती हैं ? परमेश्वर ने मनुष्य के लिये मरना निश्यित क्यों किया है ?

मृत्यु को यदि वास्वत में देखा जाए तो वह मनुष्य की भलाई के लिये है। क्योंकि यदि मृत्यु नहीं होती तो मनुष्य को पाप से छुटकारा कैसे मिलता ? यदि मृत्यु नहीं होती तो मनुष्य सदा पाप में ही वर्तमान रहता। क्या आप सुन रहे हैं ? मृत्यु वास्तव में मनुष्य की भलाई के लिये हैं। क्योंकि यदि मृत्यु नहीं होती तो मनुष्य सदा इस पाप की देह में ही रहता। पर मृत्यु के द्वारा मनुष्य इस पाप की देह से छुटकारा पाकर एक ऐसे जीवन में प्रवेश करने की आशा रख सकता है जो स्वर्गीय और अनन्त जीवन है। पर हर एक इन्सान मरने के बाद स्वर्ग में नहीं जाता। किन्तु, इसका अर्थ यह नहीं है कि हरएक इंसान मृत्यु के बाद स्वर्ग में नहीं जा सकता। हर एक मनुष्य, यदि चाहे तो अपनी मृत्यु के बाद स्वर्ग में जा सकता है। क्योंकि परमेश्वर ऐसा चाहता है। और उसने ऐसा सम्भव किया है कि हर एक इन्सान स्वर्ग में नहीं जाऐगा। क्यों ? क्योंकि हर एक मनुष्य पापी है। हर एक के भीतर पाप है। हर एक स्वयं अपने ही पापों के कारण परमेश्वर से दूर और अलग हैं। और पाप के साथ और पाप के भीतर मरके कोई भी मनुष्य

परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करके उसके साथ हमेशा तक रहने के लिये नहीं जा सकता।

सो मनुष्य क्या करे ? क्या मृत्यु के बाद नरक में जाने के विपरीत उसके पास और कोई दूसरा रास्ता नहीं है? क्या वह अपने पापों से छुटकारा पाकर अपने आप को स्वर्ग में जाने के योग्य नहीं बना सकता ?

पाप मनुष्य की एक बडी ही विशाल समस्या है। कोई भी इन्सान ऐसा नहीं है जो पाप किए बिना इस पृथ्वी पर अपना जीवन बिता ले। यह ठीक है कि छोटे मासूम बालक परमेश्वर कि दृष्टि में पाप नहीं करते। और वे उसकी नज़र में बिल्कुल निर्दोष है। क्योंकि उन में पाप करने कि क्षमता नहीं है। क्योकि वे तो जानते ही नहीं कि अच्छाई क्या है और बुराई क्या है। और यदि उन में से किसी की मृत्यु हो जाए तो वह आत्मा अवश्य ही स्वर्ग में परमेश्वर के पास जाएगी। प्रभु यीशु ने मासूम बच्चो के विषय में कहा था कि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है। किन्तु प्रत्येक व्यक्ति जो बड़ा और समझदार है। जो अच्छाई और बुराई को समझता है वह परमेश्वर के नजर में पापी है। और उसे अपने पापों से उद्धार पाने कि आवश्यकता है। क्योंकि यदि वह अपने पापो कि क्षमा प्राप्त किए बिना इस जगत से चला जाएगा तो वह परमेश्वर के पास उसके स्वर्ग में नहीं जाएगा। सो मनुष्य क्या करे। क्या उसकी इस समस्या का कोई समाधान है।

परमेश्वर ने बाइबल में मनुष्य कि इस विशाल समस्या का समाधान बताया है। और वास्तव में परमेश्वर ने मनुष्य को बाइबल इसी उद्देश्य से दी है। बाइबल में परमेश्वर ने हमे एक सुसमाचार दिया है। बाइबल परमेश्वर के सुसमाचार की पुस्तक है। और मनुष्य के लिए परमेश्वर का सुसमाचार यह है। कि परमेश्वर ने हमारे अपराधों के कारण हमें नाश

होने से बचा लिया क्योकि उसने अपने वचन को एक इन्सान की देह पहनाकर पृथ्वी पर भेज दिया। और हमारे पापों के कारण सारे जगत के पापों के प्रायश्चित के लिए उसे बलिदान कर दिया। बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए। (यूहन्ना ३:१६)।

सो हम हर–एक व्यक्ति से यह कह रहे हैं, कि वह परमेश्वर के पुत्र प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास लाए। उसे अपना मुक्तिदाता स्वीकार करे और उसकी आज्ञा मानकर अपने सब पापों से क्षमा प्राप्त करने के लिये जल में बपतिस्मा ले। बाइबल में लिखा है, कि यीशु परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में एक बिचवई है। यीशु के द्वारा परमेश्वर के साथ हमारा मेल होता है। वह हमारे पापों का प्रायश्चित है। सो, आज यदि आप यीशु मसीह मे हैं, यदि आप ने उसे अपना मुक्तिदाता और अपने पापों का प्रायश्चित मान लिया है, और अगर आप उसके बताए मार्ग पर चलकर अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं, तो आप के पास यह आशा है कि जब आप इस जगत से जाएंगे तो आप परमेश्वर के पास उसके स्वर्ग में जाएंगें। परन्तु यदि आप प्रभु यीशु मसीह में नहीं हैं, यदि आप ने उसे अपने जीवन में ग्रहण नहीं किया है, तो आप के पास क्या आशा है ?